



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (i)

PART II—Section 3—Sub-section (i)

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 518]

नई दिल्ली, मंगलवार, जुलाई 26, 2016/श्रावण 4, 1938

No. 518]

NEW DELHI, TUESDAY, JULY 26, 2016/SRAVANA 4, 1938

वित्त मंत्रालय

(राजस्व विभाग)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 26 जुलाई, 2016

सं. 26/2016-केन्द्रीय उत्पाद शुल्क

सा.का.नि. 728(अ).— केन्द्रीय उत्पाद शुल्क अधिनियम, 1944 (1944 का 1) की धारा 5क की उपधारा (1) के तहत प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए केन्द्र सरकार, इस बात से संतुष्ट होते हुए कि ऐसा करना सार्वजनिक हित में आवश्यक है, एतद्वारा, भारत सरकार, वित्त मंत्रालय (राजस्व विभाग) की अधिसूचना सं. 12/2012-केन्द्रीय उत्पाद शुल्क, दिनांक 17 मार्च, 2012, जिसे सा.का.नि. 163 (अ), दिनांक 17 मार्च, 2012 के तहत भारत के राजपत्र, असाधारण के भाग II, खण्ड-3, उपखण्ड (i) में प्रकाशित किया गया था, में और आगे निम्नलिखित संशोधन करती है, यथा :-

उक्त अधिसूचना में,

(क) सारणी में, क्रम सं. 199 और उससे संबंधित प्रविष्टियों के स्थान पर निम्नलिखित को प्रतिस्थापित किया जाएगा, यथा :-

(1)	(2)	(3)	(4)	(5)
"199"	7113	(I) आभूषण की वस्तुएं (II) आभूषण की वस्तुओं के भाग (III) चांदी के आभूषणों, उनसे भिन्न जिनमें कि हीरे, माणिक्य, पन्ना या नीलम जड़े हों स्पष्टीकरण— इस ब्लॉक के उद्देश्य के लिए,— आभूषण की कोई वस्तु या आभूषण की वस्तु का भार या दोनों, जो कि ऐसी मिश्र धातु (जिसमें सिंटेड मिक्चर या इंटरमेटलिक कम्पाउंड भी	1% 1% शून्य	16 16 -";

		<p>आते हैं) जिसमें कि कीमती धातु आती है, को कीमती धातु का आभूषण की वस्तु या आभूषण की वस्तु का भाग या दोनों तब माना जाएगा जब इनमें से कोई कीमती धातु आभूषण की वस्तु या आभूषण की वस्तु का भाग या दोनों (इसमें जड़े कीमती या अर्द्ध कीमती नग के भार को छोड़कर) के भार के 2% तक निम्नानुसार हो :</p> <p>(i) आभूषण की ऐसी कोई वस्तु या आभूषण की वस्तु का भाग या दोनों, जिसमें कि भार के हिसाब से दो प्रतिशत या इससे अधिक प्लेटिनम हो उसे प्लेटिनम के आभूषण की वस्तु या आभूषण की वस्तु का भाग या दोनों माना जाएगा;</p> <p>(ii) आभूषण की ऐसी वस्तु या आभूषण की ऐसी वस्तु का भाग या दोनों जिसमें भार के हिसाब से 2 प्रतिशत या इससे अधिक का सोना हो लेकिन प्लेटिनम न हो या प्लेटिनम भार के हिसाब से 2 प्रतिशत से कम हो तो उसे सोने के आभूषण की वस्तु या आभूषण की वस्तु का भाग या दोनों माना जाएगा;</p> <p>(iii) आभूषण की ऐसी वस्तु या आभूषण की ऐसी वस्तु का भाग या दोनों जिसमें भार के हिसाब से 2 प्रतिशत या इससे अधिक की चांदी हो उसे चांदी के आभूषण के वस्तु आभूषण के वस्तु का भाग या दोनों कहा जाएगा।</p>		
--	--	---	--	--

[फा.सं. 354/25/2016-टीआरयू (पार्ट-I)]

अनुराग सहगल, अवर सचिव

नोट : प्रधान अधिसूचना सं. 12/2012-केन्द्रीय उत्पाद शुल्क, दिनांक 17 मार्च, 2012 को सा.का.नि. 163 (अ), दिनांक 17 मार्च, 2012 के तहत भारत के राजपत्र, असाधारण के भाग II, खण्ड-3, उपखण्ड (i) में प्रकाशित किया गया था और इसमें अंतिम बार अधिसूचना सं. 22/2016-केन्द्रीय उत्पाद शुल्क, दिनांक 5 मई, 2016, जिसे सा.का.नि. 490 (अ), दिनांक 5 मई, 2016 के तहत भारत के राजपत्र, असाधारण के भाग II, खण्ड-3, उपखण्ड (i) में प्रकाशित किया गया था, के द्वारा संशोधन किया गया है।

MINISTRY OF FINANCE**(Department of Revenue)****NOTIFICATION**New Delhi, the 26th July, 2016**No. 26/2016 – Central Excise**

G.S.R. 728 (E). – In exercise of the powers conferred by sub-section (1) of section 5A of the Central Excise Act, 1944 (1 of 1944), the Central Government, being satisfied that it is necessary in the public interest so to do, hereby makes the following further amendments in the notification of the Government of India in the Ministry of Finance (Department of Revenue), No. 12/2012-Central Excise, dated the 17th March, 2012, published in the Gazette of India, Extraordinary, Part II, Section 3, Sub-section (i), *vide* G.S.R. 163 (E), dated the 17th March, 2012, namely:-

In the said notification,

(A) in the Table, for serial number 199 and the entries relating thereto, the following shall be substituted, namely:-

(1)	(2)	(3)	(4)	(5)
“199	7113	(I) Articles of jewellery	1%	16
		(II) Parts of articles of jewellery	1%	16
		(II) Articles of silver jewellery, other than those studded	Nil	—”;

		<p>with diamond, ruby, emerald or sapphire</p> <p>Explanation. – For the purposes of this exemption,-</p> <p>An article of jewellery or part of article of jewellery or both, produced or manufactured from an alloy (including a sintered mixture and an inter-metallic compound) containing precious metal may be treated as an article of jewellery or part of article of jewellery or both of a precious metal, if any one precious metal constitutes as much as 2% by weight of the article of jewellery or part of article of jewellery or both (excluding the weight of the precious or semi-precious stones, mounted or set), in accordance to the following :</p> <p>(i) an article of jewellery or part of article of jewellery or both, containing 2% or more, by weight, of platinum is to be treated as an article of jewellery or part of article of jewellery or both, of platinum;</p> <p>(ii) an article of jewellery or part of article of jewellery or both, containing 2% or more, by weight, of gold but not platinum, or less than 2% by weight, of platinum, is to be treated as an article of jewellery or part of article of jewellery or both, of gold ;</p> <p>(iii) other articles of jewellery or parts of articles of jewellery or both, containing 2% or more, by weight, of silver are to be treated as articles of jewellery or parts of articles of jewellery or both, of silver.</p>		
--	--	--	--	--

[F. No. 354/25/2016 –TRU (Pt.-I)]

ANURAG SEHGAL, Under Secy.

Note : The principal notification No. 12/2012-Central Excise, dated the 17th March, 2012 was published in the Gazette of India, Extraordinary, Part II, Section 3, Sub-section (i) vide number G.S.R. 163(E), dated the 17th March, 2012 and last amended vide notification No. 23/2016 -Central Excise, dated the 17th May, 2016 published in the Gazette of India, Extraordinary, Part II, Section 3, Sub-section (i) vide number G.S.R. 525(E), dated the 17th May, 2016.

अधिसूचना

नई दिल्ली, 26 जुलाई, 2016

सं. 27/2016-केन्द्रीय उत्पाद शुल्क

सा.का.नि. 729(अ).—केन्द्रीय उत्पाद शुल्क अधिनियम, 1944 (1944 का 1) की धारा 5क की उपधारा (1) के तहत प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए केन्द्र सरकार, इस बात से संतुष्ट होते हुए कि ऐसा करना सार्वजनिक हित में आवश्यक है, एतद्वारा, -

- आभूषण, जो कि खुदरा ग्राहकों द्वारा दिए गए हों से; या
- कीमती रत्न, जो कि खुदरा ग्राहकों द्वारा दिए गए हों, से

निर्मित आभूषणों की वस्तुओं को उत्पाद शुल्क से उस हद तक की छूट प्रदान करता है जहां तक कि यह इसके मूल्य, जो कि विनिर्माता या प्रधान विनिर्माता, जैसी भी स्थिति हो के द्वारा ऐसे आभूषणों को बनाने में लगायी गयी अतिरिक्त सामग्री की कीमत और विनिर्माता या प्रधान विनिर्माता, जैसी भी स्थिति हो के द्वारा खुदरा ग्राहकों से वसूले गए श्रम प्रभार के योग के बराबर होता है, पर लगने वाले उत्पाद शुल्क से अतिरिक्त होता है।

2. एतद्दिन उल्लिखित छूटों को प्राप्त करने के लिए विनिर्माता या प्रधान विनिर्माता, जैसी भी स्थिति हो एक समुचित रिकॉर्ड रखेगा जिसमें निम्नलिखित ब्यौरे होंगे, यथा :-

- i. खुदरा ग्राहक का नाम और पता;
- ii. आभूषणों की तौल और शुद्धता, कीमती रत्नों की तौल, जो कि खुदरा ग्राहकों द्वारा दिए गए हों;
- iii. रसीद संख्या और तारीख;
- iv. इश्यू वाउचर की संख्या और तारीख जिस दिन ऐसे आभूषण या कीमती रत्न, कारीगर के पास या स्वयं सर्राफ के परिसर में विनिर्माण के लिए भेजे गए हों; और
- v. मूल्यवर्धन जिसमें अतिरिक्त सामग्रियों की कीमत और श्रम प्रभार जो कि सर्राफ द्वारा वसूला गया हो शामिल है, इसमें खुदरा ग्राहक को जारी किए गए वीजक का अलग से उल्लेख करना पड़ेगा।

स्पष्टीकरण - 1 - इस अधिसूचना के प्रयोजन के लिए तौल से अभिप्राय कीमती धातुओं की ग्राम में तौल से तथा कीमती रत्नों के मामले में कैरट से है।

स्पष्टीकरण- 2 - शंका के समाधान के लिए एतद्वारा यह स्पष्ट किया जाता है कि इस अधिसूचना के प्रयोजन के लिए अभिव्यक्ति, 'आभूषण' में किसी भी प्रकार की ऐसी कोई कीमती धातु नहीं आएगी जो कि इन वस्तुओं के विनिर्माता या प्रधान विनिर्माता, जैसी भी स्थिति हो, को खुदरा ग्राहक द्वारा दिए आभूषणों से भिन्न हो।

[फा.सं. 354/25/2016-टीआरयू (पार्ट-I)]

अनुराग सहगल, अवर सचिव

NOTIFICATION

New Delhi, the 26th July, 2016

No. 27/2016 – Central Excise

G.S.R. 729(E).—In exercise of the powers conferred by sub-section (1) of section 5A of the Central Excise Act, 1944 (1 of 1944), the Central Government, being satisfied that it is necessary in the public interest so to do, hereby exempts articles of jewellery manufactured,-

- (i) from jewellery provided by a retail customer; or
- (ii) by mounting of precious stones provided by a retail customer,

from so much of the excise duty leviable thereon, as is in excess of the duty of excise payable on a value which is sum of the cost of additional materials used by the manufacturer or principal manufacturer, as the case may be, for making such article of jewellery and labour charges charged by the manufacturer or principal manufacturer, as the case may be, from the retail customer.

2. For availing the exemption under this notification, the manufacturer or principal manufacturer, as the case may be, shall maintain a proper record containing the following details, namely:-

- (i) name and address of the retail customer;
- (ii) weight and purity of the jewellery, weight of precious stone provided by the retail customer;
- (iii) receipt number and date;
- (iv) issue voucher number and date of sending such jewellery or precious stones to a job worker or to the manufacturing premises of the jeweller himself; and
- (v) value addition, including cost of additional materials and labour charges, charged by the jeweller, which shall also be mentioned separately in the invoice issued to the retail customer.

Explanation.-1 - For the purposes of this notification, weight refers to weight in grams for precious metals; and in carats for precious stones.

Explanation.-2 - For the removal of doubts, it is hereby clarified that for the purposes of this notification, the expression "jewellery" shall not include precious metal in any form, other than jewellery provided by a retail customer for the manufacture of articles of jewellery to a manufacturer or principal manufacturer, as the case may be.

[F. No. 354/25/2016 –TRU (Pt.-I)]

ANURAG SEHGAL, Under Secy.

अधिसूचना

नई दिल्ली, 26 जुलाई, 2016

सं. 28/2016 -केन्द्रीय उत्पाद शुल्क

सा.का.नि. 730(अ).—केन्द्र सरकार, केन्द्रीय उत्पाद शुल्क अधिनियम, 1944 (1944 का 1) की धारा 5क की उपधारा (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए तथा इस बात से सहमत होने पर कि ऐसा करना लोकहित में आवश्यक है, एतद्वारा भारत के राजपत्र असाधारण भाग II, खंड 3, उपखंड (i) में सा.का.नि. 138 (अ) के अंतर्गत दिनांक 1 मार्च, 2003 को प्रकाशित भारत सरकार वित्त मंत्रालय, (राजस्व विभाग) की दिनांक 1 मार्च, 2003 की अधिसूचना संख्या 8/2003-केन्द्रीय उत्पाद शुल्क में निम्नलिखित और संशोधन करती है, अर्थात् :-

उपर्युक्त अधिसूचना में-

(क) सारणी में क्रम सं. 3 के स्थान पर और इससे संबंधित प्रविष्टियों के स्थान पर निम्नलिखित क्रम संख्या और प्रविष्टियां प्रतिस्थापित की जाएंगी, अर्थात्:-

(1)	(2)	(3)
"3	घरेलू उपभोग के लिए आभूषण की मदों अथवा आभूषण की मदों के हिस्से अथवा दोनों, जिसमें चाँदी के आभूषणों की मदें शामिल नहीं हैं, अपितु इसमें चाँदी के आभूषणों की वे मदें शामिल हैं जिन पर हीरा, माणिक्य, पन्ना अथवा नीलम जड़ा है, जो कि प्रथम अनुसूची के अध्याय शीर्ष 7113 के अंतर्गत आते हैं, तथा किसी वित्त वर्ष में 1 अप्रैल को या इसके बाद उनका सकल मूल्य 10 करोड़ रुपये से अधिक नहीं है, प्रथम अनुसूची में विनिर्दिष्ट उत्पाद शुल्क की संपूर्ण ड्यूटी से पहली निकासी; बशर्ते कि 1 मार्च, 2016 से शुरू होने वाले और 31 मार्च, 2016 को समाप्त होने वाली अवधि के दौरान यह छूट, घरेलू उपभोग के लिए आभूषण की मदों अथवा आभूषण की मदों के हिस्से अथवा दोनों, जिसमें चाँदी के आभूषणों की मदें शामिल नहीं हैं, अपितु इसमें चाँदी के आभूषणों की वे मदें शामिल हैं जिन पर हीरा, माणिक्य, पन्ना अथवा नीलम जड़ा है, जो कि प्रथम अनुसूची के अध्याय शीर्ष 7113 के अंतर्गत आते हैं, की पहली निकासी के संबंध में छूट, अधिकतम 85 लाख रुपये के सकल मूल्य तक लागू होगी।	शून्य";

(ख) पैरा 2 में -

(i) उप-पैरा (iii) में, परन्तुक के स्थान पर निम्नलिखित प्रतिस्थापित किया जाएगा, अर्थात्:-

"बशर्ते कि आभूषण की मदों अथवा आभूषण की मदों के हिस्से अथवा दोनों, जिसमें चाँदी के आभूषणों की मदें शामिल नहीं हैं, अपितु इसमें चाँदी के आभूषणों की वे मदें शामिल हैं जिन पर हीरा, माणिक्य, पन्ना अथवा नीलम जड़ा है, जो कि प्रथम अनुसूची के अध्याय शीर्ष 7113 के अंतर्गत आते हैं, का निर्माता, उक्त नियमों के नियम 11 अथवा नियम 3 के अंतर्गत घरेलू उपभोग के लिए निकासी की

गई वस्तुओं के उत्पादन में प्रयोग किए गए आगतों पर अदा की गई ड्यूटी के क्रेडिट का फायदा नहीं उठाएगा, जिनकी पहली निकासी का, उक्त सारणी में विनिर्दिष्ट किए अनुसार आंकलित किया गया सकल मूल्य 10 करोड़ रुपये से अधिक नहीं हो; बशर्ते यह भी कि इस उप-पैरा में विहित कोई भी बात किसी अन्य व्यक्ति जो कि पैरा 4 की शर्तों के अनुसार यह छूट प्राप्त करने के लिए पात्र नहीं है, के ब्रांड नाम अथवा व्यापार नाम वाली विनिर्दिष्ट वस्तुओं के उत्पादन में प्रयोग किए जाने वाले आगतों पर लागू नहीं होगी।"

(ii) उप-पैरा (iv) में, परन्तुक के स्थान पर निम्नलिखित प्रतिस्थापित किया जाएगा, अर्थात्:-

"बशर्ते कि आभूषण की मदों अथवा आभूषण की मदों के हिस्से अथवा दोनों, जिसमें चाँदी के आभूषणों की मदें शामिल नहीं हैं, अपितु इसमें चाँदी के आभूषणों की वे मदें शामिल हैं जिनपर हीरा, माणिक्य, पन्ना अथवा नीलम जड़ा है, जो कि प्रथम अनुसूची के अध्याय शीर्ष 7113 के अंतर्गत आते हैं, का निर्माता, उक्त नियमों के नियम 3 अथवा नियम 11 के अंतर्गत उक्त निकासी के संबंध में ड्यूटी का भुगतान यदि कोई हो, के लिए पूंजीगत वस्तुओं पर अदा किए गए पूंजीगत वस्तु संबंधी क्रेडिट का भी उपयोग नहीं करेगा, जिनकी पहली निकासी का, उक्त सारणी में विनिर्दिष्ट किए अनुसार आंकलित किया गया सकल मूल्य 10 करोड़ रुपये से अधिक नहीं हो।"

(iii) उपपैरा (vii) में, परन्तुक के स्थान पर निम्नलिखित प्रतिस्थापित किया जाएगा, अर्थात्:-

"बशर्ते कि आभूषण की मदों अथवा आभूषण की मदों के हिस्से अथवा दोनों, जिसमें चाँदी के आभूषणों की मदें शामिल नहीं हैं, अपितु इसमें चाँदी के आभूषणों की वे मदें शामिल हैं जिनपर हीरा, माणिक्य, पन्ना अथवा नीलम जड़ा है, जो कि प्रथम अनुसूची के अध्याय शीर्ष 7113 के अंतर्गत आते हैं, के निर्माता द्वारा घरेलू उपभोग के लिए उत्पादन अथवा निर्माण के एक अथवा अधिक कारखाने अथवा परिसर से अथवा एक अथवा अधिक उत्पादकों द्वारा कारखाने अथवा उत्पादन के परिसर से सभी उत्पाद शुल्क योग्य वस्तुओं की, की गई निकासी के संबंध में सकल मूल्य पिछले वित्त वर्ष में 15 करोड़ रुपये से अधिक नहीं होना चाहिए।

(ग) पैरा 3 में "निर्धारण के आशय से" से प्रारंभ होने वाले शब्दों और 'ध्यान में रखा गया, अर्थात्' पर समाप्त होने वाले शब्दों के स्थान पर निम्नलिखित प्रतिस्थापित किया जाएगा, अर्थात् :-

"किसी वित्त वर्ष में एक अप्रैल को या इसके पश्चात क्रम सं. 1 के संबंध में 150 लाख रुपये तक अथवा क्रम सं. 3 के संबंध में 10 करोड़ रुपये तक के, जैसा भी मामला हो, सकल मूल्य की पहली निकासियों का निर्धारण करने के आशय से निम्नलिखित निकासियों को ध्यान में नहीं रखा जाएगा।"

[फा. सं. 354/25/2016-टीआरयू भाग-1]

अनुराग सहगल, अवर सचिव

टिप्पणी: प्रधान अधिसूचना सं. 8/2003 –केन्द्रीय उत्पाद शुल्क, दिनांक 1 मार्च, 2003, भारत के राजपत्र, असाधारण में दिनांक 1 मार्च, 2012 को सा.का.नि. 138(अ) के अंतर्गत प्रकाशित की गई थी और इसमें दिनांक 1 मार्च, 2016 की अधिसूचना सं. 8/2016-केन्द्रीय उत्पाद शुल्क जो कि 1 मार्च, 2016 को सा.का.नि. संख्या 225(अ) के अंतर्गत प्रकाशित की गई थी, के द्वारा अंतिम बार संशोधन किया गया था।

NOTIFICATION

New Delhi, the 26th July, 2016

No. 28/2016 – Central Excise

G.S.R. 730(E).—In exercise of the powers conferred by sub-section (1) of section 5A of the Central Excise Act, 1944 (1 of 1944), the Central Government, on being satisfied that it is necessary in the public interest so to do, hereby makes the following further amendments in the notification of the Government of India in the Ministry of

Finance (Department of Revenue) No. 8/2003-Central Excise dated the 1st March, 2003, published in the Gazette of India, Extraordinary, Part II, Section 3, Sub-section (i) *vide* number G.S.R. 138 (E) dated, the 1st March, 2003, namely :-

In the said notification,-

(a) in the Table, for serial number 3, and the entries relating thereto, the following serial number and entries shall be substituted, namely:-

(1)	(2)	(3)
“3	<p>First clearances of the articles of jewellery or parts of articles of jewellery or both for home consumption, other than articles of silver jewellery but inclusive of articles of silver jewellery studded with diamond, ruby, emerald or sapphire, falling under chapter heading 7113 of the First Schedule upto an aggregate value not exceeding ten crore rupees made on or after the 1st day of April in any financial year, from the whole of the duty of excise specified thereon in the First Schedule :</p> <p>Provided that during the period starting from 1st March, 2016 and ending on 31st March, 2016, the exemption shall apply to the first clearances of the articles of jewellery or parts of articles of jewellery or both for home consumption, other than articles of silver jewellery but inclusive of articles of silver jewellery studded with diamond, ruby, emerald or sapphire, falling under chapter heading 7113 of the First Schedule, up to an aggregate value not exceeding eighty five lakh rupees.</p>	Nil.”;

(b) in paragraph 2,-

(i) in sub-paragraph (iii), for the proviso, the following shall be substituted, namely:-

“Provided that the manufacturer of the articles of jewellery or parts of articles of jewellery or both other than articles of silver jewellery but inclusive of articles of silver jewellery studded with diamond, ruby, emerald or sapphire, falling under chapter heading 7113 of the First Schedule shall not avail the credit of duty on inputs under rule 3 or rule 11 of the said rules, paid on inputs used in the manufacture of these goods cleared for home consumption, the aggregate value of first clearances of which, as calculated in the manner specified in the said Table does not exceed ten crore rupees :

Provided further that nothing contained in this sub-paragraph shall apply to the inputs used in the manufacture of specified goods bearing the brand name or trade name of another person, which are ineligible for the grant of this exemption in terms of paragraph 4;”;

(ii) in sub-paragraph (iv), for the proviso, the following shall be substituted, namely:-

“Provided that the manufacturer of the articles of jewellery or parts of articles of jewellery or both other than articles of silver jewellery but inclusive of articles of silver jewellery studded with diamond, ruby, emerald or sapphire, falling under chapter heading 7113 of the First Schedule also does not utilise the credit on capital goods under rule 3 or rule 11 of the said rules, paid on capital goods, for payment of duty, if any, on the aforesaid clearances, the aggregate value of first clearances of which does not exceed ten crore rupees, as calculated in the manner specified in the said Table;”;

(iii) in sub-paragraph (vii), for the proviso, the following shall be substituted, namely:-

“Provided that aggregate value of clearances of all excisable goods for home consumption by a manufacturer of the articles of jewellery or parts of articles of jewellery or both other than articles of silver jewellery but inclusive of articles of silver jewellery studded with diamond, ruby, emerald or sapphire, falling under chapter heading 7113 of the First Schedule, from one or more factory or

premises of production or manufacture, or from a factory or premise of production or manufacture by one or more manufacturers, does not exceed rupees fifteen crore in the preceding financial year;”;

(c) in paragraph 3, for the words beginning with “For the purposes of determining”, and ending with “taken into account, namely :-”, the following shall be substituted, namely:-

“For the purposes of determining the first clearances upto an aggregate value not exceeding one hundred and fifty lakh rupees made against serial number 1 or upto an aggregate value not exceeding ten crore rupees made against serial number 3, of the said Table, as the case may be, on or after the 1st day of April in any financial year, the following clearances shall not be taken into account, namely:-”.

[F. No. 354/25/2016 –TRU (Pt.-I)]

ANURAG SEHGAL, Under Secy.

Note:- The principal notification No. 8/2003-Central Excise, dated the 1st March, 2003, was published in the Gazette of India, Extraordinary, vide number G.S.R. 138(E), dated the 1st March, 2012 and was last amended vide notification No. 8/2016-Central Excise, dated the 1st March, 2016, published vide number G.S.R. 225(E), dated the 1st March, 2016.

अधिसूचना

नई दिल्ली, 26 जुलाई, 2016

सं. 29/2016-केन्द्रीय उत्पाद शुल्क

सा.का.नि. 731(अ),- केन्द्रीय उत्पाद शुल्क अधिनियम, 1944 (1944 का 1) की धारा 5क की उपधारा (1) के तहत प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए केन्द्र सरकार, इस बात से संतुष्ट होते हुए कि ऐसा करना सार्वजनिक हित में आवश्यक है, एतद्वारा भारत सरकार, वित्त मंत्रालय (राजस्व विभाग) की अधिसूचना सं. 17/2011-केन्द्रीय उत्पाद शुल्क, दिनांक 1 मार्च, 2011, जिसे सा.का.नि. 132 (अ), दिनांक 1 मार्च, 2011 के तहत भारत के राजपत्र, असाधारण के भाग II, खण्ड-3, उपखण्ड (i) में प्रकाशित किया गया था, में और आगे निम्नलिखित संशोधन करती है, यथा :-

उक्त अधिसूचना में, सारणी में क्रम सं. 1 और उससे संबंधित प्रविष्टियों के स्थान पर निम्नलिखित को प्रतिस्थापित किया जाएगा, यथा :-

(1)	(2)
“1	हस्तशिल्प, जो कि उक्त अधिनियम की उक्त सूची के 7113 के अंतर्गत आने वाले हस्तशिल्प से भिन्न हों।”

[फा.सं. 354/25/2016-टीआरयू (पार्ट-I)]

अनुराग सहगल, अवर सचिव

नोट : प्रधान अधिसूचना सं. 17/2011-केन्द्रीय उत्पाद शुल्क, दिनांक 1 मार्च, 2011 को सा.का.नि. 132 (अ), दिनांक 1 मार्च, 2011 के तहत भारत के राजपत्र, असाधारण में प्रकाशित किया गया था।

NOTIFICATION

New Delhi, the 26th July, 2016

No. 29/2016 – Central Excise

G.S.R. 731(E).—In exercise of the powers conferred by sub-section (1) of section 5A of the Central Excise Act, 1944 (1 of 1944), the Central Government, being satisfied that it is necessary in the public interest so to do, hereby makes the following further amendments in the notification of the Government of India in the Ministry of

Finance (Department of Revenue), No. 17/2011-Central Excise, dated the 1st March, 2011, published in the Gazette of India, Extraordinary, Part II, Section 3, Sub-section (i), *vide* G.S.R.132(E), dated the 1st March, 2011, namely:-

In the said notification, in the Table, for serial number 1 and the entries relating thereto, the following shall be substituted namely:-

(1)	(2)
“1.	Handicrafts, other than the handicrafts falling under heading 7113 of the said Schedule to the said Act.”.

[F. No. 354/25/2016 –TRU (Pt.-I)]

ANURAG SEHGAL, Under Secy.

Note:- The principal notification No. 17/2011-Central Excise, dated the 1st March, 2011, was published in the Gazette of India, Extraordinary, vide number G.S.R. 132(E), dated the 1st March, 2011.

अधिसूचना

नई दिल्ली, 26 जुलाई, 2016

सं. 33/2016-केन्द्रीय उत्पाद शुल्क (गै.टे.)

सा.का.नि. 732(अ).—केन्द्रीय उत्पाद शुल्क अधिनियम, 1944 (1944 का 1) की धारा 3 की उपधारा (2) के तहत प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए केन्द्र सरकार, एतद्वारा, केन्द्रीय उत्पाद शुल्क टैरिफ अधिनियम, 1985 (1986 का 5) की प्रथम अनुसूची के शीर्ष 7113 के अंतर्गत आने वाले उत्पाद शुल्क वाली वस्तुओं, जो कि नीचे दी गई सारणी के कॉलम (2) में विनिर्दिष्ट हैं, के टैरिफ मूल्य को उक्त सारणी के कॉलम (3) में दी गई प्रविष्टि के अनुसार विनिर्दिष्ट करती है, यथा –

सारणी

क्र.सं.	उत्पाद शुल्क वाली वस्तुओं का विवरण	टैरिफ मूल्य
(1)	(2)	(3)
1.	आभूषण की वस्तुएं या आभूषण की वस्तुओं के भाग या दोनों (उनसे भिन्न जो कि खुदरा ग्राहक द्वारा दिए गए कीमती धातुओं से विनिर्मित किए गए हों)।	वह मूल्य जिस पर कि ऐसी उत्पाद शुल्क वाली वस्तुओं को पंजीकृत परिसरों से या केन्द्रीयकृत पंजीकृत परिसरों से, जिसमें कि ऐसे पंजीकृत परिसरों के शाखाएं भी आती हैं, विनिर्माता या प्रधान विनिर्माता द्वारा जैसी भी स्थिति हो, पहली बार बेचा जाता है (एतश्मिन पश्चात जिसे इस अधिसूचना में “प्रथम बिक्री मूल्य” से संदर्भित किया गया है)।
2.	आभूषण की वस्तुएं या आभूषण की वस्तुओं के भाग या दोनों जो कि खुदरा ग्राहक द्वारा लाये गये कीमती धातुओं से विनिर्मित की गई हों।	वह मूल्य जो की निम्नलिखित का योग हो i. विनिर्माता या प्रधान विनिर्माता, जैसी भी स्थिति हो के द्वारा ऐसे आभूषणों को बनाने में लगायी गयी अतिरिक्त सामग्री की कीमत; ii. विनिर्माता या प्रधान विनिर्माता, जैसी भी स्थिति हो के द्वारा खुदरा ग्राहकों से वसूले गए श्रम प्रभार; और iii. खुदरा ग्राहक द्वारा लाये गये कीमती धातु के मूल्य।

स्पष्टीकरण—इस अधिसूचना के प्रयोजन के लिए आभूषण की वस्तुओं या आभूषण की वस्तुओं के भाग या दोनों के विनिर्माता या प्रधान विनिर्माता, जैसी भी स्थिति हो के पंजीकृत परिषद या केन्द्रीय पंजीकृत परिषद या ऐसे केन्द्रीयकृत पंजीकृत परिषद की शाखाओं जहां से कि ऐसी वस्तुओं का प्रथम बार बिक्री होती है, से अभिप्राय ऐसे स्थान से है जहां कि ऐसी आभूषण की वस्तुओं या आभूषण की वस्तुओं के भाग या दोनों को हटाया जाता है और इनके हटाने के समय के बारे में भी तदनुसार ऐसा ही अर्थ लगाया जाएगा।

[फा. सं. 354/25/2016-टीआरयू (भाग-I)]

अनुराग सहगल, अवर सचिव

NOTIFICATIONNew Delhi, the 26th July, 2016**No. 33/2016 – Central Excise (N.T.)**

G.S.R. 732(E).—In exercise of the powers conferred by sub-section (2) of section 3 of the Central Excise Act, 1944 (1 of 1944), the Central Government hereby fixes the tariff value in respect of the excisable goods falling under heading 7113 of the First Schedule to the Central Excise Tariff Act, 1985 (5 of 1986) mentioned in column (2) of the Table below, to be the value as specified in the corresponding entry in column (3), of the said Table, namely:-

TABLE

S. No.	Description of excisable goods	Tariff value
(1)	(2)	(3)
1.	Articles of jewellery or parts of articles of jewellery or both, (other than those which are manufactured from the precious metal provided by the retail customer).	Value at which such excisable goods are sold for the first time from the registered premises or from the centrally registered premises, or branches of such centrally registered premises (hereinafter referred to as the “first sale value”) by the manufacturer or principal manufacturer, as the case may be.
2.	Articles of jewellery or parts of articles of jewellery or both which are manufactured from the precious metal provided by the retail customer.	Value which is sum of the,- (a) cost of additional materials used by the manufacturer or principal manufacturer, as the case may be, for making such articles of jewellery; (b) labour charges charged by the manufacturer or principal manufacturer, as the case may be, from the retail customer; and (c) value of precious metal provided by the retail customer.

Explanation.- For the purposes of this notification, the registered premises or the centrally registered premises or branches of such centrally registered premises, of the manufacturer or principal manufacturer, as the case may be, of articles of jewellery or parts of articles of jewellery or both, from where the goods are sold for the first time shall be the place of removal for such articles of jewellery or parts of articles of jewellery or both, and the time of removal shall be construed accordingly.

[F. No. 354/25/2016 –TRU (Pt.-I)]

ANURAG SEHGAL, Under Secy.

अधिसूचना

नई दिल्ली, 26 जुलाई, 2016

सं. 34/2016-केंद्रीय उत्पाद शुल्क (गै.टे.)

सा.का.नि. 733(अ).—केंद्र सरकार, केंद्रीय उत्पाद शुल्क अधिनियम 1944 (1944 का 1) की धारा 37 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए एतद्वारा निम्नलिखित नियम बनाती है, अर्थात:-

1. लघु शीर्ष, विस्तार और प्रारंभन- (1) इन नियमों का नाम आभूषण की मर्दे (कर का संचय) नियमावली, 2016 है।

(2) ये शासकीय राजपत्र में अपने प्रकाशन की तारीख से प्रवृत्त होंगे।

2. लागू होना- ये नियम केन्द्रीय टैरिफ अधिनियम, 1985(1986 का 5) के शीर्ष 7113 के अंतर्गत आने वाले आभूषणों की मदों अथवा आभूषणों की मदों के हिस्सों अथवा दोनों पर लागू होंगे।

3. परिभाषाएं – इन नियमों में जब तक अन्यथा अपेक्षित नहीं हो-

- (क) “अधिनियम” से अभिप्राय केंद्रीय उत्पाद शुल्क अधिनियम 1944 (1944 का 1) से है;
- (ख) “निर्धारण” में निर्धारिती द्वारा किए गए ड्यूटी का स्वनिर्धारण शामिल है;
- (ग) “निर्धारिती” से अभिप्राय है उत्पाद शुल्क लगने योग्य वस्तुओं का निर्माता अथवा प्रधान निर्माता, जैसा भी मामला हो;
- (घ) “बोर्ड” से अभिप्राय केंद्रीय राजस्व बोर्ड अधिनियम 1963 (1963 का 54) के अंतर्गत गठित केंद्रीय उत्पाद शुल्क और सीमा शुल्क बोर्ड से है;
- (ङ) “ड्यूटी” से अभिप्राय अधिनियम की धारा 3 के अंतर्गत देय ड्यूटी से है;
- (च) “वस्तुओं” से अभिप्राय है टैरिफ अधिनियम के शीर्ष 7113 के अंतर्गत आने वाली आभूषणों की मदें अथवा आभूषणों की मदों के हिस्से अथवा दोनों जहां “आभूषणों की मदों” अभिव्यक्ति का अभिप्राय वहीं होगा जो टैरिफ अधिनियम के अध्याय 71 के अध्याय नोट 9 के अंतर्गत नियत है।
- (छ) “जाब वर्क” से अभिप्राय जाब वर्कर को दी गई कच्ची सामग्री अथवा सेमी फिनिस्ड वस्तुओं पर काम करने से है ताकि संपूर्ण प्रक्रिया के एक हिस्से अथवा पूर्ण हिस्से को पूरा किया जा सके जिसके परिणामस्वरूप केंद्रीय उत्पाद शुल्क टैरिफ अधिनियम की प्रथम अनुसूची के शीर्ष 7113 के अंतर्गत आने वाले आभूषणों की मदों अथवा आभूषणों के मदों के हिस्सों अथवा दोनों के निर्माण अथवा उन्हें अंतिम रूप दिए जाने को पूरा किया जा सके;
- (ज) “जाब वर्कर” से अभिप्राय ऐसे व्यक्ति से है जो कि प्रधान निर्माता द्वारा दिए गए आगतों अथवा वस्तुओं से प्रधान निर्माता की ओर से निर्माण अथवा प्रोसेसिंग के कार्य में लगा रहता है ताकि संपूर्ण प्रक्रिया के एक हिस्से अथवा पूर्ण हिस्से को पूरा किया जा सके, जिसके परिणामस्वरूप वस्तुओं के निर्माण को अंततः पूरा किया जा सके;
- (झ) “प्रधान निर्माता” से अभिप्राय ऐसे व्यक्ति (जो कि एक निर्यात अधोमुखी इकाई नहीं है अथवा किसी विशेष आर्थिक जोन में अवस्थित इकाई नहीं है अथवा ऐसा व्यक्ति नहीं है जो पुनः निर्माण के लिए अथवा रि-कंडीशन के लिए अपना पहले से खरीदे गए सोने अथवा किसी कीमती धातु गहनों अथवा आभूषणों अथवा जड़वाने के उद्देश्य से अपने कीमती रत्नों को देता है) से है जो कि जाब वर्क आधार पर अपनी ओर से आभूषण की मदों को तैयार करवाता है और ऐसे आभूषणों की प्रथम बिक्री करवाता है;
- (ञ) “चांदी की जड़ित वस्तुओं” से अभिप्राय है टैरिफ अधिनियम के शीर्ष 7113 के अंतर्गत आने वाले हीरे, माणिक्य, पन्ना, अथवा नीलम से जड़ित चांदी के आभूषणों की मदें जहां “आभूषणों की मदों”, अभिव्यक्ति का अभिप्राय वहीं होगा जो टैरिफ अधिनियम के अध्याय 71 के अध्याय 9 के अंतर्गत नियत है।
- (ट) “टैरिफ अधिनियम” से अभिप्राय केंद्रीय उत्पाद शुल्क टैरिफ अधिनियम 1985 (1986 का 5) से है;
- (ठ) “व्यापारगत वस्तुओं” से अभिप्राय उन वस्तुओं से है जिन पर उनकी प्रथम बार बिक्री के समय समुचित ड्यूटी (जिसमें शून्य ड्यूटी भी शामिल है) पहले ही अदा कर दी गई है;
- (ड) यहां प्रयोग किए गए शब्द और अभिव्यक्तियां जिन्हें इन नियमों में परिभाषित नहीं किया गया है और जिन्हें अधिनियम में परिभाषित किया गया है, का वही अभिप्राय होगा जो उनका अभिप्राय अधिनियम में है।

4. ड्यूटी के निर्धारण की तारीख- (1) वस्तुओं पर लागू ड्यूटी की दर वह दर होगी जो उस तारीख को लागू है जिस तारीख को ऐसी वस्तुएं निर्माता अथवा प्रधान निर्माता, जैसा भी मामला हो द्वारा उसके पंजीकृत परिसर अथवा केंद्रीयकृत पंजीकृत परिसर अथवा ऐसे केंद्रीयकृत पंजीकृत परिसरों की शाखाओं से पहली बार बेची जाती हैं।

5. ड्यूटी का निर्धारण- उत्पाद शुल्क लगने योग्य वस्तुओं पर देय ड्यूटी का निर्धारण निर्धारिती स्वयं करेगा।

6. भुगतान का तरीका- (1) निर्माता अथवा प्रधान निर्माता, जैसा भी मामला हो द्वारा उसके पंजीकृत परिसर अथवा केंद्रीयकृत पंजीकृत परिसर अथवा ऐसे केंद्रीयकृत पंजीकृत परिसरों की शाखाओं से माह के दौरान पहली बार बेची जाने वाली वस्तुओं पर ड्यूटी का भुगतान अगले माह की 6 तारीख तक किया जाएगा यदि ड्यूटी का भुगतान इंटरनेट बैंकिंग के माध्यम से इलेक्ट्रानिक रूप में किया जाता है अथवा किसी अन्य मामले में अगले माह की 5 तारीख तक।

बशर्ते कि निर्माता अथवा प्रधान निर्माता, जैसा भी मामला हो द्वारा उसके पंजीकृत परिसर से मार्च माह के दौरान पहली बार बेची गई वस्तुओं के मामले में ड्यूटी 31 मार्च तक अदा कर दी जाएगी।

बशर्ते यह भी कि जहां कहीं कोई निर्धारिती, किसी वित्त वर्ष में पहली बार बेची गई वस्तुओं की निकासी के मूल्य/वस्तुओं के मूल्य पर आधारित अधिसूचना के अंतर्गत छूट पाने का पात्र है तो वित्त वर्ष की तिमाही के दौरान पहली बार बेची गई वस्तुओं पर झूटी का भुगतान उस तिमाही के अगले माह की 6 तारीख तक कर दिया जाएगा यदि झूटी का भुगतान इंटरनेट बैंकिंग के माध्यम से इलेक्ट्रानिक रूप में किया जाता है और अन्य मामले में उस तिमाही के पश्चात के माह की 5 तारीख तक कर दिया जाएगा, सिवाय उन वस्तुओं के जिन्हें 1 जनवरी को शुरू होकर और 31 मार्च को समाप्त होने वाली अंतिम तिमाही के दौरान हटाया जाता है, जिनके संबंध में झूटी का भुगतान 31 मार्च तक किया जाएगा।

स्पष्टीकरण 1. – संदेह दूर करने के लिए एतद्वारा यह स्पष्ट किया जाता है कि वस्तुओं के निर्माण अथवा उत्पादन में लगा निर्धारिती पात्र होगा यदि पिछले वित्त वर्ष में घरेलू उपभोग संबंधी सभी उत्पाद शुल्क लगने योग्य वस्तुओं जिनकी उक्त अधिसूचना में विनिर्दिष्ट तरीके से गणना की गई है, की निकासी का सकल मूल्य 15 करोड़ रुपए से अधिक नहीं हो।

स्पष्टीकरण 2. – इस परंतुक में विनिर्दिष्ट भुगतान का तरीका, निर्धारिती को संपूर्ण वित्त वर्ष में उपलब्ध कराया जाएगा।

स्पष्टीकरण 3. – इस नियम के आशय से –

(क) झूटी की देयता को पूरा कर लिया गया तभी माना जाएगा यदि देय धनराशि विनिर्दिष्ट तिथि के अंदर केंद्र सरकार के खाते में क्रेडिट कर दी जाती है।

(ख) यदि निर्धारिती चेक के माध्यम से झूटी करवाता है तो इस आशय से केंद्रीय उत्पाद शुल्क और सीमा शुल्क बोर्ड द्वारा निर्धारित बैंक में चेक प्रस्तुत करने की तारीख चेक की उगाही के अद्यधीन वह तारीख मानी जाएगी जिसको झूटी अदा की गई है।

(2) उपनियम (1) में विहित किसी भी बात के बावजूद मार्च, अप्रैल, मई और जून, 2016 माह में उसके पंजीकृत परिसरों अथवा केन्द्रीय पंजीकृत परिसरों अथवा ऐसे केन्द्रीय पंजीकृत परिसरों की शाखाओं से पहली बार बिक्री की गई वस्तुओं पर झूटी का भुगतान 31 जुलाई, 2016 तक कर दिया जाएगा।

स्पष्टीकरण – संदेह दूर करने के लिए एतद्वारा यह स्पष्ट किया जाता है कि झूटी की देयता को पूरा कर लिया गया तभी माना जाएगा यदि देय धनराशि विनिर्दिष्ट तिथि के अंदर केंद्र सरकार के खाते में क्रेडिट कर दी जाती है।

(3) प्रत्येक निर्धारिती इंटरनेट बैंकिंग के माध्यम से झूटी का भुगतान इलेक्ट्रानिक रूप में करेगा।

बशर्ते यह कि क्षेत्राधिकार प्राप्त सहायक आयुक्त अथवा उपायुक्त, केंद्रीय उत्पाद शुल्क को लिखित में कारण संसूचित करते हुए कोई निर्धारिती इंटरनेट बैंकिंग के अलावा किसी अन्य माध्यम से झूटी का भुगतान कर सकता है।

(4) यदि निर्धारिती देय तारीख के भीतर झूटी की धनराशि को अदा नहीं करता है तो वह अधिनियम की धारा 11 कक के अंतर्गत जारी केंद्र सरकार की अधिसूचना में विनिर्दिष्ट दर पर, पिछली बकाया धनराशि पर देय तारीख के पश्चात पहले दिन से शुरू होकर पिछली बकाया धनराशि के वास्तविक भुगतान की तारीख तक पिछली बकाया धनराशि तथा उस पर लगने वाले ब्याज को अदा करने का दायी होगा।

(5) यदि कोई निर्धारिती उसके द्वारा दी गई विवरणी में घोषित देय झूटी का भुगतान देय तारीख से 1 महीने के भीतर नहीं कर पाता है तो निर्धारिती अदा नहीं किए गए झूटी की इस धनराशि के संबंध में देय तिथि से संगणित प्रत्येक माह अथवा इसके किसी हिस्से के संबंध में वह अवधि जिसके लिए वह देय धनराशि जमा नहीं करवा पाया है, 1 प्रतिशत की दर से शास्ति का भुगतान करने का दायी होगा।

स्पष्टीकरण – इस उपनियम के उद्देश्य से “माह” से अभिप्राय है उपनियम (1) अथवा उपनियम (1) के प्रथम परंतुक, जैसा भी मामला हो, के अंतर्गत विनिर्दिष्ट झूटी के भुगतान के लिए दो लगातार देय तारीखों के बीच की अवधि।

(6) अधिनियम की धारा 11 के प्रावधान, नियम 5 के अंतर्गत यथा निर्धारित और केंद्रीय उत्पाद शुल्क नियमावली 2002 के अंतर्गत दायर विवरणी में उल्लिखित झूटी, उपनियम (4) के अंतर्गत ब्याज और उपनियम (5) के अंतर्गत शास्ति की वसूली के संबंध में उसी प्रकार लागू होंगे जिस प्रकार वे किसी अन्य झूटी की वसूली अथवा केंद्र सरकार को देय अन्य धनराशि की वसूली के संबंध में लागू होते हैं।

स्पष्टीकरण – इस नियम के उद्देश्य से अभिव्यक्ति “झूटी” अथवा “उत्पाद शुल्क की झूटी” में सेनवेट क्रेडिट नियमावली, 2004 की शर्तों के अनुसार देय धनराशि भी शामिल होगी।

7. दैनिक स्टॉक का खाता – (1) प्रत्येक निर्धारिती निर्मित और व्यापारगत वस्तुओं की प्राप्ति और बिक्री का अलग-अलग रिकार्ड रखेगा जिसमें दैनिक आधार पर निर्मित वस्तुओं के विवरण का ब्यौरा दर्शाएगा।

(2) निर्मित वस्तुओं के संबंध में निर्धारिती द्वारा रखे जाने वाले सभी रिकार्ड और दस्तावेज जिनमें निर्मित वस्तुओं की प्राप्ति अथवा जाब वर्कर के परिसर से वापस प्राप्त वस्तुओं, घरेलू उपभोग के लिए पंजीकृत परिसरों अथवा केन्द्रीय पंजीकृत परिसरों अथवा ऐसे केन्द्रीय पंजीकृत परिसरों की शाखाओं से प्रथम बार बिक्री की गई निर्माण वस्तुओं की मात्रा, निर्यात के लिए पंजीकृत परिसरों अथवा केन्द्रीय पंजीकृत परिसरों अथवा ऐसे केन्द्रीय पंजीकृत परिसरों की शाखाओं से प्रथम बार बिक्री की गई निर्मित वस्तुओं की मात्रा की आवृत्तियों का रिकार्ड दर्शाया गया है और जिसमें अन्य रिकार्ड और दस्तावेज भी शामिल हैं, वित्त वर्ष जिससे ये रिकार्ड संबंधित हैं के तुरंत 5 वर्ष पश्चात की अवधि तक इन्हें संभाल कर रखा जाएगा।

(3) व्यापारगत वस्तुओं के संबंध में निर्धारिती द्वारा रख-रखाव किए गए सभी रिकार्ड और दस्तावेजों, जिसमें खरीद के समय उनकी व्यापारगत वस्तुओं के स्टॉक की कीमत दर्शाने वाले रिकार्ड और अन्य रिकार्ड और दस्तावेज भी शामिल हैं, वित्त वर्ष जिससे ये रिकार्ड संबंधित हैं के तुरंत 5 वर्ष पश्चात की अवधि तक इन्हें संभाल कर रखा जाएगा।

(4) इस नियम के अंतर्गत निर्धारिती द्वारा निर्मित और व्यापारगत वस्तुओं का रख-रखाव किए जाने संबंधी सभी रिकार्डों को भार और कार्टेज आधार पर रखा जाएगा।

(5) निर्धारिती के पास विकल्प है की इस नियम के अंतर्गत रिकार्डों को इलेक्ट्रॉनिक रूप में रखे और इस प्रकार से रखे गए रिकार्ड का प्रत्येक पृष्ठ डिजिटल हस्ताक्षर द्वारा अधिप्रमाणित किया जाएगा।

8. इनवायस के आधार पर हटाई जाने वाली वस्तुएं – (1) निर्धारिती द्वारा उसके पंजीकृत परिसरों अथवा केन्द्रीयकृत पंजीकृत परिसरों अथवा ऐसे केन्द्रीयकृत पंजीकृत परिसरों की शाखाओं से प्रथम बार बिना इनवायस के (यहां "प्रथम बिक्री इनवायस" के रूप में संदर्भित) किसी भी उत्पाद शुल्क लगने योग्य वस्तु की बिक्री नहीं की जाएगी।

(2) पहली बिक्री इनवायस पर निर्धारिती अथवा उसके प्राधिकृत एजेंट द्वारा समुचित रूप से हस्ताक्षर किए जाएंगे तथा उस पर क्रम सं. डाली जाएगी। इस प्रकार की इनवायस पर पंजीकरण सं., कंसाइनी का नाम, वस्तुओं का विवरण, वर्गीकरण तथा बिक्री द्वारा हटाए जाने की तारीख भी लिखी जाएगी।

(3) प्रथम बिक्री इनवायस निर्मित और व्यापारगत वस्तुओं का अलग-अलग प्रदर्शित मूल्य दर्शाएगी ताकि निर्मित वस्तुओं पर देय उत्पाद शुल्क का आकलन किया जा सके।

(4) इनवायस दो प्रतियों में और निम्नलिखित तरीके से तैयार की जाएगी, अर्थात :-

(i) मूल प्रति को क्रेता के लिए मूल प्रति के रूप में रेखांकित किया जाएगा;

(ii) दूसरी प्रति को निर्धारिती के लिए दूसरी प्रति के रूप में रेखांकित किया जाएगा;

(5) डिजिटल रूप से हस्ताक्षरित इनवायस के संबंध में केन्द्रीय उत्पाद शुल्क नियमावली के प्रावधान यथा आवश्यक परिवर्तनों सहित इन नियमों के अंतर्गत डिजिटल रूप से हस्ताक्षरित इनवायस के संबंध में लागू होंगे।

9. आभूषण की मदों अथवा आभूषण की मदों के हिस्सों के संबंध में जाब वर्क – (1) कोई प्रधान निर्माता जो जाब वर्क आधार पर अपनी ओर से वस्तुओं का निर्माण करवाता है, ऐसी वस्तुओं के संबंध में पंजीकरण करवाएगा, खाते का रख-रखाव करेगा, इस पर लगने वाली झूटी अदा करेगा तथा इन नियमों के संगत प्रावधानों की कि इस प्रकार अनुपालना करेगा जैसे वह एक निर्धारिती हो।

(2) उक्त प्रधान निर्माता किसी जाब वर्कर को किसी आगत अथवा वस्तुओं की आपूर्ति करेगा अथवा करवाएगा ताकि प्रक्रिया आंशिक अथवा पूर्ण रूप से पूरी हो सके जिसके परिणाम स्वरूप आभूषण की मदों अथवा आभूषण की मदों के हिस्से अथवा दोनों का निर्माण हो सके तथा यह कार्य वह चालान के अंतर्गत, वाउचर जारी करके अथवा किसी अन्य दस्तावेज के माध्यम से करेगा जिसमें उक्त प्रधान निर्माता अथवा उसके प्राधिकृत एजेंट द्वारा यथावत् हस्ताक्षर किया हुआ निम्नलिखित ब्यौरा होना चाहिए :

(क) प्रधान निर्माता का नाम और पंजीकरण सं. ;

(ख) आगत अथवा वस्तुओं का विवरण और मात्रा ;

(ग) आगत अथवा वस्तुएं ले जाने वाले व्यक्ति का नाम तथा जिसके साथ उसके हस्ताक्षर और पहचान का सबूत हो; और

(घ) आगतों अथवा वस्तुओं की आपूर्ति की तारीख।

(3) प्रधान निर्माता को जाब वर्कर को आपूर्ति गई आगतों अथवा वस्तुओं का तथा जाब वर्कर द्वारा लौटाए गए आगतों अथवा वस्तुओं का रिकार्ड रखना पड़ेगा।

(4) जाब वर्कर को अपने-आप को पंजीकृत कराने की अपेक्षा नहीं होगी और उसे इन नियमों के अंतर्गत जाब वर्क करने के मुख्य उद्देश्यों के संबंध में की गई प्रक्रिया को दर्शाने के लिए कोई रिकार्ड रखना अपेक्षित नहीं होगा।

स्पष्टीकरण :- संदेह दूर करने के लिए यहां एतद्वारा यह स्पष्ट किया जाता है कि ऐसी वस्तुओं की प्रथम बार बिक्री से पूर्व किसी भी समय कोई वस्तुएं अथवा उनका कोई हिस्सा गुम हो जाता है, खराब हो जाता है, कम पड़ जाता है तो प्रधान निर्माता उन वस्तुओं पर उस झूटी को अदा करने के लिए दायी होगा जो पंजीकृत परिसरों अथवा केन्द्रीय पंजीकृत परिसरों अथवा ऐसे केन्द्रीय पंजीकृत परिसरों की शाखाओं से पहली बार बिक्री के लिए घरेलू उपभोग के लिए निकासी की गई होती और यह झूटी कच्चे माल की कीमत तथा जाब वर्क की लागत के योग के मूल्य पर ली जाएगी जिसका भुगतान प्रधान निर्माता द्वारा किया गया हो यदि उसमें वस्तुओं का निर्माण जाब वर्क के आधार पर कराया हो। अन्य मामलों में इन वस्तुओं का मूल्य कच्चे माल की कीमत तथा बनावट की लागत के योग के बराबर होगा।

10. कतिपय आशय के लिए आगतों अथवा सेमी फिनिस्ड वस्तुओं अथवा फिनिस्ड वस्तुओं को हटाया जाना - (1) कोई निर्माता अथवा प्रधान निर्माता, जैसा भी मामला हो किन्हीं आगतों, सेमी फिनिस्ड वस्तुओं अथवा फिनिस्ड वस्तुओं को आगे की प्रोसेसिंग, परीक्षण, मरम्मत, रि-कंडीशनिंग, हॉल मार्किंग, प्रदर्शनी में रखे जाने अथवा किसी और अन्य उद्देश्य जिसमें सेंपल भी शामिल हैं, को हटाकर किसी अन्य परिसरों पर झूटी के भुगतान किए बिना ले जा सकता है तथा यह कार्य वह चालान के अंतर्गत, वाउचर जारी करके अथवा किसी अन्य दस्तावेज के माध्यम से करेगा जिसमें उक्त प्रधान निर्माता अथवा उसके प्राधिकृत एजेंट जैसा भी मामला हो, द्वारा यथावत् हस्ताक्षर किया हुआ निम्नलिखित ब्यौरा होना चाहिए :

(क) निर्माता अथवा प्रधान निर्माता, जैसा भी मामला हो, का नाम और पंजीकरण सं. ;

(ख) वस्तुओं का विवरण और मात्रा ;

(ग) वस्तुएं ले जाने वाले व्यक्ति का नाम तथा जिसके साथ उसके हस्ताक्षर और पहचान का सबूत हो; और

(घ) हटाने की तारीख।

(2) उप नियम (1) में संदर्भित वस्तुओं की निकासी या वापस लाने की जिम्मेवारी संबंधित निर्माता अथवा प्रधान निर्माता, जैसा भी मामला हो, की होगी।

11. कतिपय प्रक्रियाओं के लिए झूटी अदा की गई वस्तुओं की प्राप्ति - (1) जहां कहीं ऐसी वस्तुएं जिन पर निर्धारिती द्वारा उनके पंजीकृत परिसरों अथवा केन्द्रीयकृत पंजीकृत परिसरों अथवा ऐसे केन्द्रीयकृत पंजीकृत परिसरों की शाखाओं से पहली बार बिक्री के समय झूटी अदा कर दी गई है, को वापस लाया जाता है, के संबंध में निर्धारिती अपने रिकार्ड में ऐसी प्राप्ति के विवरण का उल्लेख करेगा कि जैसे कि ये व्यापारगत वस्तुएं हैं तथा इन्हें व्यापारगत स्टॉक के लेख में दर्शाएगा बशर्ते कि उत्पाद शुल्क की वापसी का कोई दावा नहीं किया जाता है।

12. वैकल्पिक योजना - (1) नियम (7) के उपनियम (1) अथवा नियम (8) के उपनियम (3) में विहित किसी भी बात के बावजूद निर्माता अथवा प्रधान निर्माता, जैसा भी मामला हो, जो उत्पादित तथा व्यापार गत वस्तुओं दोनों में लेने देन करता हो अपने विकल्प पर पिछले वित्त वर्ष की 28 फरवरी तक क्षेत्राधिकार प्राप्त उत्पाद शुल्क प्राधिकारी को लिखित घोषणा करते हुए किसी माह के दौरान अपनी प्रथम बिक्री को निर्मित वस्तुओं की बिक्री के रूप में मानते हुए अपने प्रथम बिक्री मूल्य पर भी उत्पाद शुल्क का भुगतान करेगा यदि माह के दौरान ऐसी बिक्री की मात्रा ऐसे माह के शुरू में निर्मित आभूषणों के आरंभिक स्टॉक से कम है अथवा समतुल्य है।

बशर्ते यह है कि इस प्रकार के लिखित घोषणा वित्त वर्ष 2016-17 के संबंध में सहायक आयुक्त या उपायुक्त केन्द्रीय उत्पाद शुल्क, जैसा भी मामला हो, को 31 जुलाई, 2016 तक दे दी जाए।

और बशर्ते कि 1 मार्च, 2016 से आरंभ 31 मार्च, 2016 तक की अवधि के लिए यह घोषणा 31 जुलाई, 2016 तक दी जाएगी।

(2) उपनियम(1) के अंतर्गत, निर्माता या प्रधान निर्माता जैसा भी मामला हो, द्वारा दिया गया विकल्प पूरे वित्त वर्ष तक वैध रहेगा।

(3) उपनियम (1) के अंतर्गत वैकल्पिक योजना का फायदा उठाने के लिए, निर्माता या प्रधान निर्माता, जैसा भी मामला हो, निम्नलिखित रिकार्ड का रख रखाव करेगा :-

(क) चांदी जड़े आभूषणों; सोने अथवा प्लैटिनम आभूषणों जिन पर हीरे जड़े हों; और अन्य सोने और प्लैटिनम के आभूषणों का अलग-अलग भार या कार्टेज के आधार पर स्टॉक ब्यौरे का रिकार्ड;

(ख) अपनी खरीद कीमत पर अपने व्यापारगत स्टॉक के मूल्य का रिकार्ड;

(4) उपनियम (3) में उल्लिखित 3 तरह की वस्तुओं के आरंभिक स्टॉक, बिक्री तथा समापन स्टॉक की गणना उत्पाद शुल्क के आकलन के लिए अलग-अलग की जाएगी।

(5) किसी माह के दौरान निर्मित वस्तुओं के आरंभिक स्टॉक से अधिक स्टॉक की बिक्री को उन व्यापारगत वस्तुओं की बिक्री माना जाएगा जिन पर कोई उत्पाद शुल्क देय नहीं होगा।

(6) यदि किसी माह के दौरान बिक्री निर्मित वस्तुओं के आरंभिक स्टॉक तथा व्यापारगत वस्तुओं के आरंभिक स्टॉक के योग से अधिक है, तो ऐसी अधिक बिक्री को उस माह में प्राप्त निर्मित वस्तुएं माना जाएगा तथा शेष को उस माह के दौरान प्राप्त व्यापारगत वस्तुएं माना जाएगा।

(7) यदि किसी माह के दौरान बिक्री निर्मित वस्तुओं के आरंभिक स्टॉक से कम है तो निर्मित वस्तुओं के शेष स्टॉक को अग्रेणित किया जाएगा तथा अनुवर्ती माह की निर्मित वस्तुओं का आरंभिक स्टॉक, पिछले माह के दौरान निर्मित वस्तुओं के इस प्रकार के अग्रेणित स्टॉक अथवा जाब वर्कर के परिसर से प्राप्त वस्तुओं अथवा निर्मित वस्तुओं का कुल योग होगा।

निम्नलिखित उदाहरण उपरोक्त नियमों को निर्देशित करते हैं (सभी आंकड़े किलोग्राम में हैं) :

उदाहरण 1- एक निर्माता या प्रधान निर्माता :

के पास 1 अप्रैल को आरंभिक स्टॉक	निर्मित स्टॉक	व्यापारगत स्टॉक
चांदी की जड़ी वस्तुएं	60	20
हीरे से जड़ी सोने या प्लेटिनम की वस्तुएं	30	20
अन्य सोने या प्लेटिनम की वस्तुएं	20	20

अप्रैल माह के दौरान बिक्री	कुल बिक्री
चांदी की जड़ी वस्तुएं	50
हीरे से जड़ी सोने या प्लेटिनम की वस्तुएं	20
अन्य सोने या प्लेटिनम की वस्तुएं	10

अप्रैल माह के दौरान प्राप्त	निर्मित स्टॉक	व्यापारगत स्टॉक
चांदी की जड़ी वस्तुएं	60	10
हीरे से जड़ी सोने या प्लेटिनम की वस्तुएं	30	30
अन्य सोने या प्लेटिनम की वस्तुएं	20	40

चूंकि माह के दौरान तीनों तरह की वस्तुओं की बिक्री निर्मित वस्तुओं के आरंभिक स्टॉक से कम है इसलिए इन्हें निर्मित वस्तुओं की बिक्री माना जाएगा, जैसा नीचे संक्षेपित है :-

वस्तुओं की मात्रा जिसे अप्रैल में बिक्री माना जाएगा	निर्मित स्टॉक	व्यापारगत स्टॉक
चांदी की जड़ी वस्तुएं	50	0
हीरे से जड़ी सोने या प्लेटिनम की वस्तुएं	20	0
अन्य सोने या प्लेटिनम की वस्तुएं	10	0

निर्माता या प्रधान निर्माता द्वारा अप्रैल माह के लिए देय ड्यूटी, 50 किलोग्राम चांदी जड़ित वस्तुओं, 20 किलोग्राम हीरे से जड़ी जोने तथा प्लेटिनम की वस्तुएं तथा 10 किलोग्राम सोने या प्लेटिनम की अन्य वस्तुओं पर देय उत्पाद शुल्क का योग होगा।

तीनों वस्तुओं के संदर्भ में निर्माता या प्रधान निर्माता के पास, अप्रैल माह के दौरान हुई बिक्री को घटाकर, 30 अप्रैल को निर्मित तथा व्यापारगत वस्तुओं का समापन स्टॉक, जो कि 1 मई का आरंभिक स्टॉक भी होगा, निम्नलिखित है:-

30 अप्रैल का समापन स्टॉक /1 मई का आरंभिक स्टॉक	निर्मित स्टॉक	व्यापारगत स्टॉक
चांदी की जड़ी वस्तुएं	70	30
हीरे से जड़ी सोने या प्लेटिनम की वस्तुएं	40	50
अन्य सोने या प्लेटिनम की वस्तुएं	30	60

उदाहरण 2: एक निर्माता या प्रधान निर्माता :

के पास 1 अप्रैल को आरंभिक स्टॉक	निर्मित स्टॉक	व्यापारगत स्टॉक
चांदी की जड़ी वस्तुएं	60	20
हीरे से जड़ी सोने या प्लेटिनम की वस्तुएं	30	20
अन्य सोने या प्लेटिनम की वस्तुएं	20	20

अप्रैल माह के दौरान बिक्री	कुल बिक्री
चांदी की जड़ी वस्तुएं	70
हीरे से जड़ी सोने या प्लेटिनम की वस्तुएं	40
अन्य सोने या प्लेटिनम की वस्तुएं	30

अप्रैल माह के दौरान प्राप्त	निर्मित स्टॉक	व्यापारगत स्टॉक
चांदी की जड़ी वस्तुएं	60	10
हीरे से जड़ी सोने या प्लेटिनम की वस्तुएं	30	30
अन्य सोने या प्लेटिनम की वस्तुएं	20	40

चूंकि माह के दौरान तीनों तरह की वस्तुओं की बिक्री, आरंभिक स्टॉक से अधिक है, हर वस्तु के आरंभिक स्टॉक के बराबर प्रथम बिक्री को निर्मित वस्तुओं की बिक्री समझा जाएगा, जैसा नीचे संक्षेपित है:

वस्तुओं की मात्रा जिसे अप्रैल में बिक्री माना जाएगा	निर्मित स्टॉक	व्यापारगत स्टॉक
चांदी की जड़ी वस्तुएं	60	10
हीरे से जड़ी सोने या प्लेटिनम की वस्तुएं	30	10
अन्य सोने या प्लेटिनम की वस्तुएं	20	10

ऐसे निर्माता या प्रधान निर्माता द्वारा अप्रैल माह के लिए देय कुल उत्पाद शुल्क 60 किलोग्राम चांदी जड़ित वस्तुओं, 30 किलोग्राम हीरे से जड़ी सोने या प्लेटिनम की वस्तुओं तथा 20 किलोग्राम अन्य सोने या प्लेटिनम की वस्तुओं पर देय उत्पाद शुल्क का योग होगा।

तीनों वस्तुओं के संदर्भ में निर्माता या प्रधान निर्माता के पास, अप्रैल माह के दौरान की बिक्री घटाकर, 30 अप्रैल को निर्मित या व्यापारगत वस्तुओं का समापन स्टॉक, जो कि 1 मई का आरंभिक स्टॉक भी होगा निम्नलिखित है:

30 अप्रैल का समापन स्टॉक /1 मई का आरंभिक स्टॉक	निर्मित स्टॉक	व्यापारगत स्टॉक
चांदी की जड़ी वस्तुएं	60	20
हीरे से जड़ी सोने या प्लेटिनम की वस्तुएं	30	40
अन्य सोने या प्लेटिनम की वस्तुएं	20	50

उदाहरण 3: एक निर्माता या प्रधान निर्माता :

के पास 1 अप्रैल को आरंभिक स्टॉक	निर्मित स्टॉक	व्यापारगत स्टॉक
चांदी की जड़ी वस्तुएं	60	20
हीरे से जड़ी सोने या प्लेटिनम की वस्तुएं	30	20
अन्य सोने या प्लेटिनम की वस्तुएं	20	20

अप्रैल माह के दौरान बिक्री	कुल बिक्री
चांदी की जड़ी वस्तुएं	70
हीरे से जड़ी सोने या प्लेटिनम की वस्तुएं	60
अन्य सोने या प्लेटिनम की वस्तुएं	30

अप्रैल माह के दौरान प्राप्त	निर्मित स्टॉक	व्यापारगत स्टॉक
चांदी की जड़ी वस्तुएं	60	10
हीरे से जड़ी सोने या प्लेटिनम की वस्तुएं	30	30
अन्य सोने या प्लेटिनम की वस्तुएं	20	40

इस मामले में , माह के दौरान तीनों तरह की वस्तुओं की बिक्री निर्मित वस्तुओं के आरंभिक स्टॉक से अधिक है हीरे से जड़ी सोने या प्लेटिनम की वस्तुओं की बिक्री निर्मित और व्यापारगत वस्तुओं के आरंभिक स्टॉक के योग से भी अधिक है ।

“चांदी की जड़ी वस्तुओं” तथा “सोने या प्लेटिनम” की अन्य वस्तुओं” के बराबर प्रथम बिक्री को निर्मित “चांदी की जड़ी वस्तुओं” और “सोने या प्लेटिनम की अन्य वस्तुओं ” की बिक्री माना जाएगा ।

तो भी “हीरे से जड़े सोने या प्लेटिनम की वस्तुओं” से संदर्भ में , 60 किलो की बिक्री को पहले निर्मित वस्तुओं के आरंभिक स्टॉक में गिना जाएगा (अर्थात 30 किलोग्राम), उसके बाद व्यापार गत वस्तुओं के आरंभिक स्टॉक में (अर्थात 20 किलोग्राम) और शेष (अर्थात 10 किलोग्राम) को माह के दौरान प्राप्त निर्मित वस्तुओं में गिना जाएगा, जो निम्नलिखित है :-

वस्तुओं की मात्रा जिसे अप्रैल में बिक्री माना जाएगा	निर्मित स्टॉक	व्यापारगत स्टॉक
चांदी की जड़ी वस्तुएं	60	10
हीरे से जड़ी सोने या प्लेटिनम की वस्तुएं	40	20
अन्य सोने या प्लेटिनम की वस्तुएं	20	10

ऐसे निर्माता या प्रधान निर्माता द्वारा अप्रैल माह के लिए देय कुल उत्पाद शुल्क, 60 किलो चांदी की जड़ी वस्तुओं , 40 किलो हीरे से जड़ी सोने या प्लेटिनम की वस्तुओं और 20 किलो सोने या प्लेटिनम की अन्य वस्तुओं पर देय उत्पाद शुल्क का योग होगा ।

तीनों वस्तुओं की संदर्भ में, निर्माता या प्रधान निर्माता के पास अप्रैल माह के दौरान बिक्री को घटाकर , 30 अप्रैल को निर्मित और व्यापारगत वस्तुओं का समापन स्टॉक, जो 1 मई का आरंभिक स्टॉक भी है, निम्नलिखित होगा:

30 अप्रैल का समापन स्टॉक /1 मई का आरंभिक स्टॉक	निर्मित स्टॉक	व्यापारगत स्टॉक
चांदी की जड़ी वस्तुएं	60	20
हीरे से जड़ी सोने या प्लेटिनम की वस्तुएं	20	30
अन्य सोने या प्लेटिनम की वस्तुएं	20	50

स्पष्टीकरण 1- इस विकल्प के परियोजन से, निर्माता अथवा प्रधान निर्माता जैसा भी मामला हो द्वारा किए गए निर्यात को माह के दौरान निर्मित स्टाक की बिक्री में गिना जाएगा।

स्पष्टीकरण 2- संदेह दूर करने के लिए एतद्वारा यह स्पष्ट किया जाता है कि केंद्रीयकृत पंजीकरण वाले निर्माता अथवा प्रधान निर्माता, जैसा भी मामला हो, की 2 शाखाओं जिनमें बिक्री का घटक शामिल नहीं है, के बीच स्टाक के अंतरण के मामले में स्टाक अंतरण की अवस्था में कोई उत्पाद शुल्क नहीं लगेगा बशर्ते इस प्रकार स्टाक अंतरित निर्मित वस्तुएं अथवा व्यापारगत वस्तुएं प्राप्तकर्ता शाखा के निर्मित वस्तुओं अथवा व्यापारगत वस्तुओं के तदनुसूची स्टाक में जोड़ी जाती हैं।

13. स्लो मूविंग आभूषणों का स्टाक ("डैड स्टाक") – (1) कोई निर्धारिती जो निर्मित और व्यापारगत वस्तुओं का अलग-अलग स्टाक रखता है और अपनी प्रथम बिक्री इनवायस में ऐसी निर्मित और व्यापारगत वस्तुओं का मूल्य अलग-अलग दर्शाता है वह अपने डैड स्टाक को, इस बात पर निर्भर करते हुए कि क्या इस प्रकार का डैड स्टाक निर्मित वस्तुओं अथवा व्यापारगत वस्तुओं के तदनुसूची स्टाक से है, निर्मित वस्तुओं अथवा व्यापारगत वस्तुओं के रूप में मानेगा।

(2) यदि कोई निर्धारिती नियम (12) के अंतर्गत वैकल्पिक योजना के अनुसार उत्पाद शुल्क अदा करने का विकल्प देता है, यदि किसी विशेष विवरणी चक्र के संबंध में सिल्वर जडित वस्तुओं ; सोने अथवा प्लैटिनम की वस्तुएं जिन पर हीरे जड़े हो ; और अन्य सोने अथवा प्लैटिनम की वस्तुएं जिन पर ड्यूटी अदा कर दी गई है अथवा जिनका उस विवरणी चक्र के अंत तक निर्यात कर लिया गया है, की संचयी बिक्री, उस विवरणी चक्र के अंत तक निर्मित स्टाक की संचयी आवतियों से अधिक है तो संपूर्ण डैड स्टाक को व्यापारगत वस्तुओं के रूप में माना जाएगा और इस प्रकार के डैड स्टाक से कृत नई वस्तुएं, निर्माता अथवा प्रधान निर्माता जैसा भी मामला हो, को वापस प्राप्त होने पर उसके व्यापारगत स्टाक का हिस्सा बनेंगे।

(3) एक निर्धारिती जो नियम (12) के अंतर्गत वैकल्पिक योजना के अनुसार उत्पाद शुल्क देने का विकल्प चुनता है के लिए, किसी विशेष विवरणी चक्र के अंत तक किसी विशेष प्रकार की वस्तुओं की संचयी बिक्री जिस पर ड्यूटी अदा कर दी गई हो या जिसका निर्यात किया गया हो, उस विवरणी चक्र के अंत तक निर्मित वस्तुओं की संचयी प्राप्तियों से कम हो , तो उस विवरणी चक्र के अंत तक उन वस्तुओं के डैड स्टाक को, उस विवरणी चक्र के अंत तक निर्मित स्टाक की संचयी प्राप्ति और संचयी बिक्री के अंतर के बराबर, निर्मित वस्तुओं के लिए माना जाएगा तथा शेष को व्यापारगत वस्तुओं के लिए माना जाएगा ।

उदाहरण – तिमाही के अंत में डैड स्टाक की ट्रीटमेंट के संबंध में 2 वैकल्पिक परिस्थितियों पर विचार किया जा सकता है:

➤ परिस्थिति 1-विवरणी चक्र के अंत में संचयी बिक्री, निर्मित वस्तुओं की संचयी आवतियों से अधिक है:

- (i) तिमाही के अंत में निर्मित वस्तुओं की संचयी आवतियां 100 किलोग्राम के बराबर है
- (ii) तिमाही के अंत में संचयी बिक्री 110 किलोग्राम के बराबर है (जिसमें से निर्माता अथवा प्रधान निर्माता जैसा भी मामला हो, ने 100 किलोग्राम पर उत्पाद शुल्क अदा किया है)
- (iii) तो ऐसी तिमाही के अंत में डैड स्टाक को व्यापारगत स्टाक के रूप में माना जाएगा तथा इसके वापिस प्राप्त होने पर इस डैड स्टाक से बनाए गए नए वस्तुओं को व्यापारगत स्टाक का हिस्सा माना जाएगा।

➤ परिस्थिति 2- विवरणी चक्र के अंत में संचयी बिक्री, निर्मित वस्तुओं की संचयी आवतियों से कम है:

- (i) तिमाही के अंत में निर्मित वस्तुओं की संचयी आवतियां 100 किलोग्राम के बराबर हैं ।
- (ii) तिमाही के अंत में संचयी बिक्री 90 किलोग्राम के बराबर हैं (जिनपर निर्माता अथवा प्रधान निर्माता जैसा भी मामला हो, ने 90 किलोग्राम पर उत्पाद शुल्क अदा किया है)।
- (iii) तो इसमें से 10 किलोग्राम (100 किलोग्राम-90 किलोग्राम) को निर्मित स्टाक माना जाएगा तथा वापिस प्राप्त होने पर इस डैड स्टाक से निर्मित नई वस्तुएं उसके निर्मित स्टाक का हिस्सा बनेंगे। तिमाही के अंत में 10 किलोग्राम से अधिक चांदी के जड़े वस्तुओं को व्यापार गत स्टाक माना जाएगा।

14. यथा आवश्यक परिवर्तनों सहित लागू होने वाले प्रावधान — यहां उपबंधित प्रावधानों को छोड़कर इस अधिनियम और केंद्रीय उत्पाद शुल्क नियमावली 2002 के सभी प्रावधान, जिसमें पंजीकरण, विवरणी दायर करने, बिना भुगतान किए निर्यात करने और देय राशि की वसूली शामिल है, यथा आवश्यक परिवर्तनों सहित लागू होंगे।

[फा. सं. 354/25/2016-टीआरयू (पार्ट-1)]

अनुराग सहगल, अवर सचिव

NOTIFICATION

No. 34/2016- Central Excise (N.T.)

New Delhi, dated the 26th July, 2016

G.S.R. 733(E).—In exercise of the powers conferred by section 37 of the Central Excise Act, 1944 (1 of 1944), the Central Government hereby makes the following rules, namely:—

1. Short title, extent and commencement. — (1) These rules may be called the Articles of Jewellery (Collection of Duty) Rules, 2016.

(2) They shall come into force on the date of their publication in the Official Gazette.

2. Application. — These rules shall apply to the articles of jewellery or parts of articles of jewellery or both, falling under Heading 7113 of the Central Excise Tariff Act, 1985 (5 of 1986).

3. Definitions. — In these rules, unless the context otherwise requires, —

(a) “Act” means the Central Excise Act, 1944 (1 of 1944);

(b) “assessment” includes self-assessment of duty made by the assessee;

(c) “assessee” means a manufacturer or principal manufacturer, as the case may be, of excisable goods;

(d) “Board” means the Central Board of Excise and Customs constituted under the Central Board of Revenue Act, 1963 (54 of 1963);

(e) “duty” means the duty payable under section 3 of the Act;

(f) “articles” means articles of jewellery or parts of articles of jewellery or both falling under Heading 7113 of the Tariff Act, wherein the expression “articles of jewellery” shall have the meaning assigned to it as under chapter note 9 of chapter 71 of the Tariff Act;

(g) “job work” means processing or working upon of raw materials or semi-finished goods supplied to the job worker, so as to complete a part or whole of the process resulting in the manufacture or finishing of articles of jewellery or parts of articles of jewellery or both falling under heading 7113 of the First Schedule to the Central Excise Tariff Act;

(h) “job worker” means a person engaged in manufacture or processing on behalf of a principal manufacturer, from any inputs or goods supplied by the principal manufacturer, so as to complete a part or whole of the process resulting ultimately in manufacture of articles.

(i) “principal manufacturer” means every person (not being an export-oriented unit or a unit located in a Special Economic Zone or any person who gives his pre-owned gold or any precious metal, ornaments or jewellery for the purpose of being re-made or re-conditioned or gives precious stones for the purpose of being mounted) who gets articles, produced or manufactured on his behalf, on job-work basis and causes the sale of the articles for the first time.

(j) “silver studded articles” means articles of jewellery of silver studded with diamond, ruby, emerald or sapphire falling under Heading 7113 of the Tariff Act, wherein the expression “articles of jewellery” shall have the meaning assigned to it as under chapter note 9 of chapter 71 of the Tariff Act;

(k) “Tariff Act” means the Central Excise Tariff Act, 1985 (5 of 1986);

(l) “traded articles” means articles, on which appropriate duty (including *nil* duty) has already been paid at the time of their sale for the first time.

(m) words and expressions used herein but not defined in these rules and defined in the Act shall have the meaning respectively assigned to them in the Act.

4. Date for determination of duty. — (1) The rate of duty applicable to the articles, shall be the rate in force on the date when such articles are sold for the first time by the manufacturer or principal manufacturer, as the case may be, from his registered premises or centrally registered premises or branches of such centrally registered premises.

5. Assessment of duty. — The assessee shall himself assess the duty payable on any excisable articles.

6. Manner of payment. — (1) The duty on the articles sold for the first time by the manufacturer or principal manufacturer, as the case may be, from his registered premises or centrally registered premises or branches of such centrally registered premises, during a month, shall be paid by the 6th day of the following month, if the duty is paid electronically through internet banking or by the 5th day of the following month, in any other case :

Provided that in case of articles sold for the first time by the manufacturer or principal manufacturer, as the case may be, during the month of March, the duty shall be paid by the 31st day of March:

Provided further that where an assessee is eligible to avail of the exemption under a notification based on the value of goods sold for the first time in a financial year, the duty on articles sold for the first time during a quarter of the financial year shall be paid by the 6th day of the month following that quarter, if the duty is paid electronically through internet banking and in any other case, by the 5th day of the month following that quarter, except in case of articles sold for the first time during the last quarter, starting from the 1st day of January and ending on the 31st day of March, for which the duty shall be paid by the 31st day of March.

Explanation-1. - For the removal of doubts, it is hereby clarified that, an assessee, engaged in the manufacture or production of the articles shall be eligible, if his aggregate value of clearances of all excisable goods for home consumption in the preceding financial year, computed in the manner specified in the said notification, did not exceed rupees fifteen crore.

Explanation-2. - The manner of payment as specified in this proviso shall be available to the assessee for the whole of the financial year.

Explanation-3. - For the purposes of this rule,-

(a) the duty liability shall be deemed to have been discharged only if the amount payable is credited to the account of the Central Government by the specified date;

(b) if the assessee deposits the duty by cheque, the date of presentation of the cheque in the bank designated by the Central Board of Excise and Customs for this purpose shall be deemed to be the date on which the duty has been paid subject to realization of that cheque.

(2) Notwithstanding anything contained in sub-rule (1), the duty on the articles sold for the first time from his registered premises or centrally registered premises or branches of such centrally registered premises in the months of March, April, May and June of 2016, by an assessee shall be paid by the 31st of July, 2016.

Explanation. - For removal of doubts, it is hereby clarified that the duty liability shall be deemed to have been discharged only if the amount payable is credited to the account of the Central Government by the specified date.

(3) Every assessee shall electronically pay duty through internet banking :

Provided that for reasons to be conveyed in writing to the Assistant Commissioner or the Deputy Commissioner of Central Excise having jurisdiction, an assessee may make payment of duty by any mode other than internet banking.

(4) If the assessee fails to pay the amount of duty by due date, he shall be liable to pay the outstanding amount along with interest at the rate specified by the Central Government *vide* notification under section 11AA of the Act on the outstanding amount, for the period starting with the first day after due date till the date of actual payment of the outstanding amount.

(5) If the assessee fails to pay the duty declared as payable by him in the return within a period of one month from the due date, then the assessee is liable to pay the penalty at the rate of one per cent. on such amount of the duty not paid, for each month or part thereof calculated from the due date, for the period during which such failure continues.

Explanation. - For the purposes of this sub-rule, 'month' means the period between two consecutive due dates for payment of duty specified under sub-rule (1) or the first proviso to sub-rule (1), as the case may be.

(6) The provisions of section 11 of the Act shall be applicable for recovery of the duty as assessed under rule 5 and mentioned in the return filed under the Central Excise Rules, 2002, the interest under sub-rule (4) and penalty

under sub-rule (5) in the same manner as they are applicable for recovery of any duty or other sums payable to the Central Government.

Explanation. - For the purposes of this rule, the expressions 'duty' or 'duty of excise' shall also include the amount payable in terms of the CENVAT Credit Rules, 2004.

7. Daily stock account. -(1) Every assessee shall maintain separate records for receipt and sale of manufactured and traded articles, indicating the particulars regarding description of the manufactured articles, on a daily basis.

(2) All records and documents maintained by the assessee for manufactured articles, including records showing receipts of articles manufactured or received back from job worker's premises, quantity of manufactured articles sold for the first time from the registered premises or centrally registered premises or branches of such centrally registered premises for home consumption, quantity of manufactured articles sold for the first time from the registered premises or centrally registered premises or branches of such centrally registered premises for exports or any other records and documents, shall be preserved for a period of five years immediately after the financial year to which such records pertain.

(3) All records and documents maintained by the assessee for traded articles, including records showing value of their traded stocks at the time of purchase or any other records and documents, shall be preserved for a period of five years immediately after the financial year to which such records pertain.

(4) All records of manufactured and traded articles maintained by the assessee under this rule shall be maintained on weight and caratage basis.

(5) The assessee at his own option may preserve records under this rule in electronic form with every page of the record so preserved authenticated by means of a digital signature.

8. Articles to be removed on invoice. -(1) No excisable articles shall be sold for the first time by the assessee from his registered premises or the centrally registered premises or branches of such centrally registered premises, except under an invoice (hereinafter referred to as the "first sale invoice").

(2) First sale invoice shall be duly signed by the assessee or his authorised agent and shall be serially numbered. Such an invoice shall also contain the registration number, name of the consignee, description of articles, classification and date of removal by sale.

(3) First sale invoice shall show value of manufactured and traded articles separately so as to arrive at the excise duty payable on the manufactured articles.

(4) The invoice shall be prepared in duplicate and in the following manner, namely:-

- (i) the original copy being marked as ORIGINAL FOR BUYER;
- (ii) the duplicate copy being marked as DUPLICATE FOR ASSESSEE;

(5) The rules relating to digitally signed invoice under the Central Excise Rules, 2002 shall *mutatis mutandis* apply in relation to the digitally signed invoice under these rules.

9. Job work in articles of jewellery or parts of articles of jewellery. - (1) A principal manufacturer who gets articles manufactured on his behalf, on job work basis shall obtain registration, maintain accounts, pay duty leviable on such articles and comply with all the relevant provisions of these rules, as if he is an assessee.

(2) The principal manufacturer may supply or cause to supply to a job worker any inputs or articles, so as to complete a part or whole of the process resulting in manufacture of articles under a challan, issue voucher or any other document which shall contain the following details, duly signed by the principal manufacturer or his authorised agent:

- (a) name and registration number of the principal manufacturer;
- (b) description and quantity of inputs or articles;
- (c) name of the person carrying the input or articles along with his signature and proof of identity; and
- (d) date of supply of inputs or articles.

(3) The principal manufacturer shall maintain records for the inputs or articles received back from the job worker against the inputs or articles supplied to them.

(4) The job worker shall not be required to get himself registered or shall not be required to maintain any record evidencing the processes undertaken for the sole purposes of undertaking job work under these rules.

Explanation. - For the removal of doubts, it is hereby clarified that if any articles are lost, destroyed, found short at any time before the sale for the first time of the articles, the principal manufacturer shall be liable to pay duty thereon as if such articles were sold for home consumption for the first time from the registered premises or centrally registered premises or branches of such centrally registered premises, at a value equal to cost of raw material plus job charges paid by the principal manufacturer in case he had got such articles manufactured on job work basis. In other cases, the value of such articles shall be the value of raw materials plus the making charges charged by the manufacturer for similar articles.

10. Removal of inputs or semi-finished articles or finished articles for certain purposes.-(1) A manufacturer or principal manufacturer, as the case may, may remove any inputs or semi-finished articles or finished articles for further processing, testing, repair, re-conditioning, hallmarking, display in exhibitions or for any other purpose including as samples, to some other premises, without payment of duty, if such removal does not involve sale, under a challan, issue voucher or any other document prepared by him for this purpose, duly signed by the manufacturer or principal manufacturer, as the case may be, or his authorised agent. Such challan or issue voucher or any other document shall contain the following details:-

- (a) name and registration number of the manufacturer or principal manufacturer, as the case may be;
- (b) description and quantity of articles;
- (c) name of the person carrying the articles along with his signature and proof of identity; and
- (d) date of removal.

(2) The manufacturer or the principal manufacturer shall account for the articles removed and returned in pursuance of sub-rule (1).

11. Receipt of duty paid articles for certain processes. -(1) Where any articles on which duty had been paid at the time of their sale for the first time by the assessee from his registered premises or the centrally registered premises or branches of such centrally registered premises, are brought back as such, the assessee shall state the particulars of such receipt in his records as if they are traded articles and account for them in the trading stock account, provided no refund of excise duty is claimed.

12. Optional scheme. -(1) Notwithstanding anything contained in sub-rule (1) of rule (7) or sub-rule (3) of rule (8), the manufacturer or principal manufacturer, as the case may be, dealing in both manufactured and traded articles, may also pay excise duty on his first sale value, by treating his first sales during a month solely as sale of manufactured articles, if the quantity of such sales during the month is less than or equal to the opening stock of manufactured articles at the start of such month, at his own option, by giving a written declaration to the excise authorities having jurisdiction by the 28th day of February of the previous financial year:

Provided that for the financial year 2016-17, such written declaration may be given to the Assistant Commissioner or Deputy Commissioner of Central Excise, as the case may be, having jurisdiction, by the 31st day of July, 2016:

Provided further that for the period beginning from 1st March, 2016 to 31st March, 2016 such declaration may be given by the 31st day of July, 2016:

(2) An option given under sub-rule (1) shall be valid for whole of the financial year for which it is given by the manufacturer or the principal manufacturer, as case may be.

(3) For availing the optional scheme under sub-rule (1) a manufacturer or principal manufacturer, as the case may be, shall maintain,-

- a) a record containing the stock details of manufactured articles and traded articles separately for silver studded articles; gold or platinum articles studded with diamonds; and other gold or platinum articles, on weight or caratage basis; and
- b) a record of the value of such traded articles separately at their purchase prices.

(4) The opening stock, sales and closing stock of three types of articles, referred to in sub-rule (3), shall be calculated separately for assessing the excise duty payable during a month.

(5) The sales in excess of opening stock of manufactured articles, during a month shall be deemed to be sale out of the opening stock of traded articles on which no excise duty shall be payable.

(6) If the sales during a month are in excess of the sum total of the opening stock of the manufactured articles and opening stock of traded articles, then such excess sales shall first be deemed to be that of manufactured articles received during that month and the balance, if any, shall be deemed to be that of traded articles received during the month.

(7) If the sales during a month are less than the opening stock of manufactured articles, then the balance stock of manufactured articles shall be carried forward and the opening stock of manufactured articles for the succeeding month shall be the sum total of such carried forward stock of manufactured articles and quantity of manufactured articles received from the job worker's premises or manufactured, during the month.

The following illustrates the above rules (all figures in kg):

Illustration 1. - A manufacturer or a principal manufacturer:

has an opening stock as on 1 st April	manufactured stock	traded stock
silver studded articles	60	20
gold or platinum articles studded with diamonds	30	20
other gold or platinum articles	20	20

sells during the month of April	total sales
silver studded articles	50
gold or platinum articles studded with diamonds	20
other gold or platinum articles	10

receives during the month of April	manufactured stock	traded stock
silver studded articles	60	10
gold or platinum articles studded with diamonds	30	30
other gold or platinum articles	20	40

As the sales during the month for the three types of articles are less than the opening stocks of such manufactured articles, the same shall be deemed to be that of manufactured articles only, as summarised below:

Quantity of articles deemed to be sold during the month of April	of manufactured articles	of traded articles
silver studded articles	50	0
gold or platinum articles studded with diamonds	20	0
other gold or platinum articles	10	0

Total excise duty payable by such manufacturer or principal manufacturer for the month of April shall be the sum total of the excise duty payable on 50 kg of silver studded articles, 20 kg of gold or platinum articles studded with diamonds and 10 kg of other gold or platinum articles.

After deducting the sales during the month of April, the closing stocks of manufactured and traded articles as on 30th April, which shall also be the opening stock as on 1st May, of three types of articles, with the manufacturer or principal manufacturer shall be as under:

Closing stock as on 30 th April / opening stock as on 1 st May	manufactured stock	traded stock
silver studded articles	70	30

gold or platinum articles studded with diamonds	40	50
other gold or platinum articles	30	60

Illustration 2. - A manufacturer or a principal manufacturer:

has an opening stock as on 1 st April	manufactured stock	traded stock
silver studded articles	60	20
gold or platinum articles studded with diamonds	30	20
other gold or platinum articles	20	20

sells during the month of April	total sales
silver studded articles	70
gold or platinum articles studded with diamonds	40
other gold or platinum articles	30

receives during the month of April	manufactured stock	traded stock
silver studded articles	60	10
gold or platinum articles studded with diamonds	30	30
other gold or platinum articles	20	40

As the sales during the month for the three types of articles are more than the opening stocks of respective articles, the first sale equal to the opening stock of each type of articles shall be deemed to be that of manufactured articles of each type, as summarised below:

Quantity of articles deemed to be sold during the month of April	of manufactured articles	of traded articles
silver studded articles	60	10
gold or platinum articles studded with diamonds	30	10
other gold or platinum articles	20	10

Total excise duty payable by such manufacturer or principal manufacturer for the month of April shall be the sum total of the excise duty payable on 60 kg of silver studded articles, 30 kg of gold or platinum articles studded with diamonds and 20 kg of other gold or platinum articles.

After deducting the sales during the month of April, the closing stocks of manufactured and traded articles as on 30th April, which shall also be the opening stock as on 1st May, of three types of articles, with the manufacturer or principal manufacturer shall be as under:

Closing stock as on 30 th April / opening stock as on 1 st May	manufactured stock	traded stock
silver studded articles	60	20
gold or platinum articles studded with diamonds	30	40
other gold or platinum articles	20	50

Illustration 3. - A manufacturer or a principal manufacturer:

has an opening stock of as on 1 st April	manufactured stock	traded stock
silver studded articles	60	20
gold or platinum articles studded with diamonds	30	20
other gold or platinum articles	20	20

sells during the month of April	total sales
silver studded articles	70
gold or platinum articles studded with diamonds	60
other gold or platinum articles	30

receives during the month of April	manufactured stock	traded stock
silver studded articles	60	10
gold or platinum articles studded with diamonds	30	30
other gold or platinum articles	20	40

In this case, the sales during the month for the three types of articles are more than the opening stocks of respective manufactured articles. Further, the sales of in respect of 'gold or platinum articles studded with diamonds' are even higher than the sum total of opening stocks of manufactured articles and traded articles.

That being so, the first sales equal to the opening stock of 'silver studded articles' and 'other gold or platinum articles' shall be deemed to be that of manufactured 'silver studded articles' and 'other gold or platinum articles' respectively.

However, in respect of 'gold or platinum articles studded with diamonds', the sales of 60 kg shall be first counted against that of opening stock of manufactured articles [that is 30 kg], thereafter against the opening stock of traded articles [that is 20 kg] and the balance [that is 10 kg] shall be counted towards the manufactured articles received during the month, as summarised below:

Quantity of articles deemed to be sold during the month of April	of manufactured articles	of traded articles
silver studded articles	60	10
gold or platinum articles studded with diamonds	40	20
other gold or platinum articles	20	10

Total excise duty payable by such manufacturer or principal manufacturer for the month of April shall be the sum total of the excise duty payable on 60 kg of silver studded articles, 40 kg of gold or platinum articles studded with diamonds and 20 kg of other gold or platinum articles.

After deducting the sales during the month of April, the closing stocks of manufactured and traded articles as on 30th April, which shall also be the opening stock as on 1st May, of three types of articles, with the manufacturer or principal manufacturer shall be as under:

Closing stock as on 30 th April / opening stock as on 1 st May	manufactured stock	traded stock
silver studded articles	60	20
gold or platinum articles studded with diamonds	20	30
other gold or platinum articles	20	50

Explanation-1. - For the purposes of this option, exports by a manufacturer or a principal manufacturer, as the case may be, shall be counted towards the sale of manufactured articles during the month.

Explanation-2. - For the removal of doubts, it is hereby clarified that in case of stock transfer between two branches of a manufacturer or a principal manufacturer with centralised registration, as the case may be, which do not involve sale, there shall be no liability to pay excise duty at the stage of stock transfer, provided such stock transferred manufactured articles or traded articles are added in corresponding stocks of manufactured articles or traded articles of the recipient branch.

13. Stock of slow moving jewellery (“dead stock”). – (1) An assessee maintaining separate stocks of manufactured and traded articles and showing the value of such manufactured and traded articles separately in his first sale invoice shall treat his dead stock as that of manufactured articles or traded articles depending upon whether such dead stock is part of his stock of manufactured articles or traded articles, as the case may be.

(2) For an assessee, who opts to pay the excise duty as per the optional scheme under rule (12), if at the end of a particular return cycle, the cumulative sales for three types of articles, namely ‘silver studded articles; ‘gold or platinum articles studded with diamonds’ or ‘other gold or platinum articles’, as the case may be, on which duty has been paid or which have been exported till the end of that return cycle are more than or equal to the cumulative receipts of manufactured stock of such articles till the end of the return cycle, then the whole of the dead stock of such articles would be deemed to be that of traded articles, and new articles made out of such dead stock on its receipt back by the manufacturer or principal manufacturer, as the case may be, would form part of his traded stock of such articles.

(3) For an assessee who opts to pay the excise duty as per the optional scheme under rule (12), the cumulative sales of a particular type of articles on which duty has been paid or which have been exported till the end of a particular return cycle are less than the cumulative receipts till the end of that return cycle of such manufactured articles, then the dead stock of such articles at the end of such return cycle, equal to the difference between the cumulative receipts of manufactured stock and the cumulative sales till the end of such return cycle shall be deemed to be that of manufactured articles, and balance, if any, shall be considered as that of traded articles.

Illustration. – Thus, two alternative situations can be considered in treatment of the dead stock at the end of the quarter:

Situation 1 – Cumulative sales at the end of return cycle are more than the cumulative receipts of manufactured articles:

- i. Cumulative receipts of manufactured silver studded articles till the end of a quarter are 100 kg.
- ii. Cumulative sales of manufactured silver studded articles till the end of the quarter are 110 kg (out of which on 100 kg the manufacturer or principal manufacturer, as the case may be, has paid excise duty or which have been exported).
- iii. Then, whole of the dead stock silver studded articles at the end of such quarter shall be treated as that of traded stock and new articles made out of such dead stock on its receipt back would form part of traded stock.

Situation 2 – Cumulative sales at the end of return cycle are less than the cumulative receipts of manufactured articles:

- i. Cumulative receipts of manufactured silver studded articles till the end of a quarter are 100 kg.
- ii. Cumulative sales of manufactured silver studded articles till the end of the quarter are 90 kg (out of which on 90 kg the manufacturer or principal manufacturer, as the case may be, has paid excise duty or which have been exported).
- iii. Then, 10 kg [100 kg – 90 kg] of dead stock of silver studded articles at the end of such quarter shall be treated as that of manufactured stock and new articles made out of such dead stock on its receipt back would form part of manufactured stock. Any dead stock of silver studded articles at the end of such quarter in excess of 10 kg shall be deemed to be that of traded stock.

14. Provisions to apply *mutatis mutandis*. - Except as herein provided, all provisions of the Act and the Central Excise Rules, 2002, including those relating to registration, filing of returns, export without payment of duty and recovery of dues shall apply *mutatis mutandis*.

[F. No. 354/25/2016 –TRU (Pt.-I)]

ANURAG SEHGAL, Under Secy.

अधिसूचना

नई दिल्ली, 26 जुलाई, 2016

सं. 35/2016-केन्द्रीय उत्पाद शुल्क (गै.टे.)

सा.का.नि. 734(अ).—केन्द्रीय उत्पाद शुल्क अधिनियम, 1944 (1944 का 1) की धारा 37 के तहत प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए केन्द्र सरकार, एतद्वारा, केन्द्रीय उत्पाद शुल्क नियमावली, 2002 में और आगे भी संशोधन करने के लिए निम्नलिखित नियम बनाती है, यथा -

1. (1) इन नियमों को केन्द्रीय उत्पाद शुल्क (द्वितीय संशोधन) नियमावली, 2016 कहा जाएगा।

(2) ये नियम सरकारी राजपत्र में अपने प्रकाशन की तारीख से प्रवर्तित होंगे।

2. केन्द्रीय उत्पाद शुल्क नियमावली, 2002 (एतश्मिन पश्चात जिसे उक्त नियमावली से संदर्भित किया गया है) में -

(क) नियम 8 में, स्पष्टीकरण 1 में,-

(i) मद और उससे संबंधित प्रविष्टियों को निरसित किया जाएगा;

(ii) मद (ख) में, संकेत और शब्द "उपर्युक्त (क) से भिन्न", को निरसित किया जाएगा।

(ख) नियम 12 में, उप-नियम (1) में,

i. चौथे परंतुक में, उपवाक्य (ii) में, संख्या, संकेत और अक्षर ",199 (झ)" के पश्चात संख्या, संकेत और अक्षर ",199 (झझ)" को अंतःस्थापित किया जाएगा;

ii. चौथे परंतुक में "और किसी अन्य का विनिर्माण नहीं करता है" शब्दों से प्रारंभ होने वाले और "उस तिमाही की समाप्ति पर जिससे कि यह रिटर्न संबंधित हो" शब्दों से समाप्त होने वाले वाक्यों के स्थान पर निम्नलिखित को प्रतिस्थापित किया जाएगा, यथा -

"और उक्त अधिसूचना में विनिर्दिष्ट वस्तुओं के अलावा अन्य किसी उत्पाद शुल्क वाली वस्तुओं का विनिर्माण नहीं करता है। बोर्ड द्वारा जारी की गई अधिसूचना में विनिर्दिष्ट फार्म में उस तिमाही के समाप्ति के 10 दिन के भीतर, जिससे कि यह रिटर्न संबंधित होता है, वस्तुओं के उत्पादन और उनको उठाए जाने तथा उनसे संबंधित अन्य ब्यौरे को तिमाही रिटर्न में भरकर जमा करेगा।

स्पष्टीकरण :- यदि अधिसूचना सं. 12/2012-केन्द्रीय उत्पाद शुल्क, दिनांक 17 मार्च, 2012 के क्रम सं. 199 (I) और 199 (II) के अंतर्गत छूट की लाभ उठाने वाले निर्धारित के मामले में 31 मार्च, 2016 को समाप्त होने वाली तिमाही के त्रैमासिक रिटर्न और 30 जून, 2016 को समाप्त होने वाले तिमाही के त्रैमासिक रिटर्न के भरे जाने की तारीख 10 अगस्त, 2016 होगी।"

(ग) नियम 12 कक में, -

(i) हाशिये के शीर्ष में, शब्द "कीमती धातुओं के आभूषणों की वस्तुएं या अन्य वस्तुएं" के स्थान पर शब्द "टैरिफ अधिनियम की प्रथम अनुसूची के शीर्ष 7114 के अंतर्गत आने वाली कीमती धातुओं की वस्तुओं" प्रतिस्थापित किए जाएंगे;

(ii) उप-नियम (1) के स्थान पर निम्नलिखित उप-नियम को प्रतिस्थापित किया जाएगा, यथा-

"(1) इन नियमों में निहित किन्हीं भी बातों के बावजूद प्रत्येक व्यक्ति (जो कि निर्यात करने वाली इकाई या विशेष आर्थिक जोन में स्थित कोई इकाई न हो), जो कि टैरिफ अधिनियम की प्रथम अनुसूची के शीर्ष 7114 के अंतर्गत आने वाले कीमती धातुओं की वस्तुओं को प्राप्त करता है, कारीगरी के आधार पर अपनी ओर से उत्पादन या विनिर्माण कराता है (एतश्मिन पश्चात जिसे उक्त व्यक्ति से संदर्भित किया गया है), को पंजीकरण कराना होगा, बहीखाता रखना होगा तथा ऐसी वस्तुओं पर लगने वाले शुल्क का भुगतान करना होगा और इस नियमावली के संबंधित प्रावधानों का अनुपालन करना होगा, यदि वह निर्धारित है तो।"

(iii) उप-नियम (9) में,-

(क) स्पष्टीकरण 1 में “आभूषणों की वस्तुओं” शब्दों और संख्या से प्रारम्भ होने वाले और “केन्द्रीय उत्पाद शुल्क टैरिफ अधिनियम, 1985” शब्दों और संख्या के स्थान पर “टैरिफ अधिनियम की प्रथम अनुसूची के शीर्ष 7114 के अंतर्गत आने वाली कीमती धातुओं की वस्तुओं” शब्दों और संख्याओं को प्रतिस्थापित किया जाएगा;

(ख) स्पष्टीकरण 4 में “आभूषणों की वस्तुओं” से प्रारंभ होने वाले तथा “टैरिफ अधिनियम की प्रथम अनुसूची” से समाप्त होने वाले शब्दों और संख्याओं के स्थान पर “टैरिफ अधिनियम की प्रथम अनुसूची के शीर्ष 7114 के अंतर्गत आने वाले कीमती धातुओं की वस्तुओं” शब्दों और संख्याओं को प्रतिस्थापित किया जाएगा।

[फा.सं. 354/25/2016-टीआरयू (पार्ट-I)]

अनुराग सहगल, अवर सचिव

नोट : प्रधान नियमावली को अधिसूचना सं. 04/2002-केन्द्रीय उत्पाद शुल्क (गै.टे.), दिनांक 01 मार्च, 2002, सा.का.नि. 143 (अ), दिनांक 01 मार्च, 2002, के द्वारा भारत के राजपत्र, असाधारण के भाग II, खण्ड-3, उपखण्ड (i) में प्रकाशित किया गया था और इसमें अंतिम बार अधिसूचना सं. 8/2016- केन्द्रीय उत्पाद शुल्क (गै.टे.), दिनांक 01 मार्च, 2016, जिसे सा.का.नि. 239 (अ), दिनांक 01 मार्च, 2016 के द्वारा भारत के राजपत्र, असाधारण के भाग II, खण्ड-3, उपखण्ड (i) में प्रकाशित किया गया था, के द्वारा संशोधन किया गया है।

NOTIFICATION

New Delhi, the 26th July, 2016

No. 35/2016 - Central Excise (N.T.)

G.S.R. 734(E). - In exercise of the powers conferred by section 37 of the Central Excise Act, 1944 (1 of 1944), the Central Government hereby makes the following rules further to amend the Central Excise Rules, 2002, namely :-

1. (1) These rules may be called the Central Excise (Second Amendment) Rules, 2016.

(2) They shall come into force on the date of their publication in the Official Gazette.

2. In the Central Excise Rules, 2002 (hereinafter referred to as the said rules), -

(A) in rule 8, in Explanation-1,-

- (i) item (a) and the entries relating thereto shall be omitted;
- (ii) in item (b), the expression “, other than (a) above” shall be omitted.

(B) in rule 12, in sub-rule (1),

- (i) in the fourth proviso, in clause (ii), after the figures, brackets and letters “199(I)”, the figures, brackets and letters “,199(II)” shall be inserted;
- (ii) in the fourth proviso, for the words beginning with “and does not manufacture any other”, and ending with “close of the quarter to which the return relates.”, the following shall be substituted, namely:-

“and does not manufacture any other excisable goods other than those specified in the said notifications, he shall file a quarterly return in the form specified by notification by the Board, of production and removal of goods and other relevant particulars, within ten days after the close of the quarter to which the return relates.

Explanation. - In the case of the assessee availing exemption under Sl. No. 199(I) and 199(II), of Notification No. 12/2012-Central excise, dated the 17th march, 2012, the date of submission of quarterly return for quarter ending on 31st March, 2016, and quarter ending on 30th June, 2016, shall be the 10th August, 2016.”

(C) in rule 12AA,-

- (i) in the marginal heading, for the words “article of jewellery or other articles of precious metals”, the words “articles of precious metals falling under heading 7114 of the First Schedule to the Tariff Act.” shall be substituted;

(ii) for sub-rule (1), the following sub-rule shall be substituted, namely:-

“(1) Notwithstanding anything contained in these rules, every person (not being an export-oriented unit or a unit located in special economic zone) who gets articles of precious metals falling under heading 7114 of the First Schedule to the Tariff Act, produced or manufactured on his behalf, on job work basis, (hereinafter referred to as “the said person”) shall obtain registration, maintain accounts, pay duty leviable on such goods and comply with all the relevant provisions of these rules, as if he is an assessee.”

(iii) in sub-rule (9),-

- A. in Explanation 1, for the words and figures beginning with “articles of jewellery”, and ending with “to the Central Excise Tariff Act, 1985”, the words and figures “articles of precious metals falling under heading 7114 of the First Schedule to the Tariff Act” shall be substituted;
- B. in Explanation 4, for the words and figures beginning with “articles of jewellery”, and ending with “First Schedule to the Tariff Act”, the words and figures “articles of precious metals falling under heading 7114 of the First Schedule to the Tariff Act” shall be substituted”.

[F. No. 354/25/2016 –TRU (Pt.-I)]

ANURAG SEHGAL, Under Secy.

Note.- The principal rules were published in the Gazette of India, Extraordinary, Part II, Section 3, Sub-section (i), dated 1st March, 2002, vide notification No.04/2002-Central Excise (N.T), dated the 1st March, 2002, vide number GSR 143(E), dated the 1st March, 2002 and were last amended by notification No.8/2016-Central Excise (N.T), dated the 1st March, 2016, published in the Gazette of India, Extraordinary, Part II, Section 3, Sub-section (i), vide number GSR 239(E), dated the 1st March, 2016.

अधिसूचना

नई दिल्ली, 26 जुलाई, 2016

सं. 36/2016-केन्द्रीय उत्पाद शुल्क (गै.टे.)

सा.का.नि. 735(अ)—केन्द्रीय उत्पाद शुल्क अधिनियम, 1944 (1944 का 1) की धारा 37 और वित्त अधिनियम, 1994 (1994 का 32) की धारा 94 के तहत प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए केन्द्र सरकार, एतद्वारा, सेनवेट क्रेडिट रूल्स, 2004 में और आगे भी संशोधन करने के लिए निम्नलिखित नियमावली बनाती है, यथा :-

1. (1) इन नियमों को सेनवेट क्रेडिट (आठवां संशोधन) नियमावली, 2016 कहा जाएगा।

(2) ये नियम सरकारी राजपत्र में अपने प्रकाशन की तारीख से प्रवर्तित होंगे।

2. सेनवेट क्रेडिट रूल्स, 2004 (एतश्मिन पश्चात जिसे उक्त नियमावली से संदर्भित किया गया है),-

(क) नियम 2 में, उपवाक्य (ढकक) में उपवाक्य (i) के स्थान पर, निम्नलिखित को प्रतिस्थापित किया जाएगा, यथा -

“(i) उत्पाद शुल्क टैरिफ अधिनियम की प्रथम अनुसूची के शीर्ष 7113 के अंतर्गत आने वाले आभूषणों की वस्तुओं, या आभूषणों की वस्तुओं के भाग या दोनों, के संबंध में ऐसे व्यक्ति भी आता है जो कि आर्टिकल्स आफ ज्वैलरी (कलैक्शन आफ ड्यूटी) रूल्स, 2016 के नियम 9 के उप-नियम 1 के अंतर्गत आने वाली ऐसी वस्तुओं पर लगने वाला उत्पाद शुल्क का भुगतान करने के लिए दायी है।”

(ik) उत्पाद शुल्क टैरिफ अधिनियम की प्रथम अनुसूची के उपशीर्ष 7114 के अंतर्गत आने वाली कीमती धातुओं की वस्तुओं के संबंध में ऐसा व्यक्ति भी आता है जो कि केन्द्रीय उत्पाद शुल्क नियमावली, 2002 के नियम 12कक के उप-नियम (1) के अंतर्गत ऐसी वस्तुओं पर लगने वाले उत्पाद शुल्क का भुगतान करने के लिए दायी है।

(ख) नियम 4 में, उप-नियम (2) में उपवाक्य (क) में, स्पष्टीकरण में, मद (i) में निम्नलिखित को प्रतिस्थापित किया जाएगा, यथा :-

“ऐसा कोई भी निर्धारती, जो कि उत्पाद शुल्क टैरिफ अधिनियम की प्रथम अनुसूची के शीर्ष 7113 के अंतर्गत आने वाले आभूषणों की वस्तुओं या आभूषणों की वस्तुओं के भाग या दोनों के विनिर्माण में लगा है तो वह पात्र होगा यदि पिछले वित्तीय वर्ष में घरेलू खपत के लिए सभी उत्पाद शुल्क वाली वस्तुओं के क्लियरेंस का सकल मूल्य, जिसकी संगणना उक्त अधिसूचना में विनिर्दिष्ट तरीके से की गई हो, 15 करोड़ रुपये से अधिक न हो।”

[फा.सं. 354/25/2016-टीआरयू (पार्ट-I)]

अनुराग सहगल, अवर सचिव

नोट : प्रधान नियमावली को अधिसूचना सं. 23/2004-केन्द्रीय उत्पाद शुल्क (गै.टे.), दिनांक 10 सितम्बर, 2004, सा.का.नि. 600 (अ), दिनांक 10 सितम्बर, 2004, के द्वारा भारत के राजपत्र, असाधारण के भाग II, खण्ड-3, उपखण्ड (i) में प्रकाशित किया गया था और इसमें अंतिम बार अधिसूचना सं. 28/2016- केन्द्रीय उत्पाद शुल्क (गै.टे.), दिनांक 26 मई, 2016, जिसे सा.का.नि. 555 (अ), दिनांक 26 मई, 2016 के द्वारा भारत के राजपत्र, असाधारण के भाग II, खण्ड-3, उपखण्ड (i) में प्रकाशित किया गया था, के द्वारा संशोधन किया गया है।

NOTIFICATION

New Delhi, the 26th July, 2016

No. 36/2016 - Central Excise (N.T.)

G.S.R. 735(E).—In exercise of the powers conferred by section 37 of the Central Excise Act, 1944 (1 of 1944) and section 94 of the Finance Act, 1994 (32 of 1994), the Central Government hereby makes the following rules further to amend the CENVAT Credit Rules, 2004, namely:-

1. (1) These rules may be called the CENVAT Credit (Eighth Amendment) Rules, 2016.

(2) They shall come into force on the date of their publication in the Official Gazette.

2. In the CENVAT Credit Rules, 2004 (hereinafter referred to as the said rules), -

(A) in rule 2, in clause (naa), for sub-clause (i), the following shall be substituted, namely:-

“(i) in relation to articles of jewellery or parts of articles of jewellery or both, falling under heading 7113 of the First Schedule to the Excise Tariff Act, includes a person who is liable to pay duty of excise leviable on such goods under sub-rule (1) of rule 9 of the Articles of Jewellery (Collection of Duty) Rules, 2016;”

(ia) in relation to articles of precious metals falling under heading 7114 of the First Schedule to the Excise Tariff Act, includes a person who is liable to pay duty of excise leviable on such goods under sub-rule (1) of rule 12AA of the Central Excise Rules, 2002;”

(B) in rule 4, in sub-rule (2), in clause (a), in the Explanation, for item (i), the following item shall be substituted, namely:-

“(i) an assessee engaged in the manufacture of articles of jewellery or parts of articles of jewellery or both, falling under heading 7113 of the First Schedule of the Excise Tariff Act, shall be eligible, if his aggregate value of clearances of all excisable goods for home consumption in the preceding financial year, computed in the manner specified in the said notification, did not exceed rupees fifteen crore;”.

[F. No. 354/25/2016 –TRU (Pt.-I)]

ANURAG SEHGAL, Under Secy.

Note.- The principal rules were published in the Gazette of India, Extraordinary, Part II, Section 3, Sub-section (i), vide, notification No. 23/2004 - Central Excise (N.T.), dated the 10th September, 2004 vide, number G.S.R. 600(E), dated the 10th September, 2004 and last amended, vide, notification No. 28/2016- Central Excise (N.T.), dated the 26th May, 2016 published in the Gazette of India, Extraordinary, Part II, Section 3, Sub-section (i), vide, number G.S.R. 555(E) , dated the 26th May, 2016.

आकलन मूल्य	भुगतान किए जाने वाला उत्पाद शुल्क 1% की दर से या 2% की दर से	भुगतान किए जाने वाला कुल शुल्क
(10)	(11)	(12)

4. इनपुट सेवा क्रेडिट सेवा का ब्यौरा :

प्रारम्भिक अधिशेष	इस तिमाही के अंतर्गत ली गई सेनवेट क्रेडिट	तिमाही के दौरान उपयोग की गई क्रेडिट	अंतिम अधिशेष
(1)	(2)	(3)	(4)

5. उत्पाद शुल्क वाले वस्तुओं पर भुगतान किए गए शुल्क का ब्यौरा :

ड्यूटी कोड	इनपुट सर्विस क्रेडिट के द्वारा भुगतान किया गया शुल्क	नकद रूप में भुगतान किया गया शुल्क	चालान संख्या भुगतान किया गया कुल शुल्क	चालान संख्या	तारीख	बैंक कोड	शाखा कोड
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)
सेनवेट							

6. किए गए अन्य भुगतानों का ब्यौरा :

भुगतान	राशि (रु. में)	चालान सं.	तारीख	बैंक कोड	शाखा कोड	टिप्पणी
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)
अन्य भुगतान (स्पष्ट करें)						

7. स्व-आकलन ज्ञापन :

- मैं एतद्वारा घोषणा करता हूं/ करती हूं कि इस रिटर्न में दी गई जानकारी सत्य, सही और हर दृष्टि से पूर्ण है और मैं निर्धारिती की ओर से हस्ताक्षर करने के लिए प्राधिकृत हूं।
- इस तिमाही के दौरान कुल ----- रुपये, जीएआर7 चालान (प्रति संलग्न) के माध्यम से जमा किए गए हैं।
- इस तिमाही के दौरान बीजक जिनकी क्रम सं. _____ से क्रम सं. _____ तक है जारी किए गए थे।

तारीख :

स्थान :

(क) निर्धारित या प्राधिकृत हस्ताक्षरकर्ता
का नाम और हस्ताक्षर

पावती

इस तिमाही के दौरान 1% या 2% की दर से क्लियर किए गए उत्पाद शुल्क वाली वस्तुओं से संबंधित रिटर्न									
MMMMYYYY से :					MMMMYYYY तक :				

	D	D		M	M		Y	Y	Y	Y
प्राप्ति की तारीख										

रेंज अधिकारी का नाम और हस्ताक्षर
मुहर सहित

निर्देश

- 15 अंक वाले पैन आधारित पंजीकरण संख्या तथा पंजीकरण प्रमाणपत्र में यथा उल्लिखित नाम को दर्शाएं
- यदि एक से अधिक मदों का विनिर्माण हुआ है तो प्रत्येक सारणी में, जहां कहीं भी जरूरी हो अतिरिक्त पंक्ति जोड़ सकते हैं।
- यदि वस्तुओं को बंधपत्र के तहत निर्यात किए जाने के लिए क्लियर किया गया है तो ऐसे क्लियरेंस का ब्यौरा अलग से दें।
- सीईटीएसएच कॉलम में 8 अंक वाले सीईटीएसएच को दर्शाएं।
- जहां कहीं भी मात्रा कोड दिखाई दे नीचे दिए गए संबंधित संक्षेप लिखें।

मात्रा	संक्षेप	मात्रा	संक्षेप
सेंटीमीटर	सेमी.	मीटर	मी.
घन सेंटीमीटर	सेमी.3	वर्ग मीटर	मी.2
घन मीटर	मीटर3	मिलीमीटर	मिमी.
ग्राम	ग्राम	मीट्रिक टन	मी.ट.
किलोग्राम	किग्रा.	जोड़े की संख्या	जोड़ा
किलोलीटर	किली.	क्विंटल	क्वि.
लीटर	ली.	टन	ट.
संख्या 1000 में	ह.	संख्या	इ.

- सारणी के कॉलम (10) में, क्रम सं. 3 में, आकलन मूल्य से अभिप्राय,
(क) जहां पर वस्तुओं पर मूल्यानुसार शुल्क लगता है, केन्द्रीय उत्पाद शुल्क अधिनियम 1944 (1944 का 1) की धारा 4 के अंतर्गत मूल्य;
(ख) जहांकि वस्तुएं इस अधिनियम की धारा 4क के अंतर्गत आती हैं, इस अधिनियम की धारा 4क के अंतर्गत यथा प्रदत्त कटौती के पश्चात एमआरपी के अंतर्गत निकाला गया आकलन मूल्य;

- અનુરાગ સહગલ, અવર સચિવ

[illegible]

3. Details of the manufacture, clearance and duty payable.-

S. No.	CETSH NO.	Description of goods	Unit of quantity	Serial number of notification No.1/2011-C.E. or No.12/2012 - C.E.	Opening balance	Quantity manufactured	Quantity cleared	Closing balance
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)	(9)

Assessable Value (Rs.)	Excise duty payable @ 1% or @ 2%	Total Duty payable
(10)	(11)	(12)

4. Details of input services credit:

Opening balance	Cenvat credit taken during the quarter	Credit utilized during the quarter	Closing balance
(1)	(2)	(3)	(4)

5. Details of duty paid on excisable goods:

Duty Code	Duty paid using input services credit	Duty paid in cash	Total duty paid	Challan No.	Date	Bank code	Branch code
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)
CENVAT							

6. Details of other payments made:

Payments	Amount (Rs.)	Challan No.	Date	Bank Code	Branch Code	Remarks
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)
Other payments (Specify)						

7. Self- assessment memorandum:

- a) I hereby declare that the information given in this Return is true, correct and complete in every respect and that I am authorized to sign on behalf of the assessee
- b) During the quarter, total Rs. _____ was deposited vide GAR7 Challans (copies enclosed).
- c) During the quarter, invoices bearing S. No . _____ to S.No _____ were issued

Date:

Place:

(A)

Name and signature of Assessee or
Authorised Signatory

ACKNOWLEDGMENT

Return of excisable goods cleared @ 1% or @ 2% duty for the quarter										
From: MMMYYYY			To: MMMYYYY							
	D	D		M	M		Y	Y	Y	Y
Date of receipt										

Name and Signature of the Range Officer with
Official Seal

INSTRUCTIONS

1. Indicate the 15-digit PAN based registration number and the name as appearing in the Registration Certificate.
2. In case more than one item is manufactured, additional row may be inserted in each table, wherever necessary.
3. In case the goods are cleared for export under Bond, the details of clearance may be mentioned separately.
4. 8-digit CETSH Number may be indicated under the column CETSH.
5. Wherever quantity codes appear, indicate relevant abbreviations as given below

Quantities	Abbreviations	Quantities	Abbreviations
Centimetre(s)	cm	Metre(s)	M
Cubic centimetre(s)	cm ³	Square metre(s)	m ²
Cubic metre(s)	m ³	Millimeter(s)	mm
Gram(s)	g	Metric tonne	mt
Kilogram	kg	Number of pairs	pa
Kilolitre	kl	Quintal	q
Litre(s)	l	Tonne(s)	t
Thousand in number	Tu	Number	u

6. In the column (10) of Table at serial number 3, the assessable value means,

- (a) where goods attract ad valorem rate of duty, the value under section 4 of Central Excise Act, 1944 (1 of 1944);

- (b) where goods are covered under section 4A of the Act, the assessable value as worked out under MRP after allowing deductions as provided under section 4A of the Act;
- (c) in case of goods for which the tariff value is fixed, such tariff value. For example, in case of articles of jewellery or parts of articles of jewellery or both, falling under heading 7113 of the First Schedule to the Central Excise Tariff Act, 1985 (5 of 1986), aggregate of first sale values fixed under notification No. 33/2016 Central Excise (N.T.), dated 26.07.2016.
- (d) in case of exports under Bond, the ARE-1 /ARE-2 /invoice value.
7. In the case of articles of jewellery or parts of articles of jewellery, the Unit of quantity in column (4), (6), (7), (8) and (9) of the Table at serial number 3 means weight in grams for precious metals and carats for precious stones embedded therein.
8. Details of any other payments like arrears, interest etc. may be mentioned in serial number 6.

[F. No. 354/25/2016 –TRU (Pt.-I)]

ANURAG SEHGAL, Under Secy.

अधिसूचना

नई दिल्ली, 26 जुलाई, 2016

सं. 38/2016 - केन्द्रीय उत्पाद शुल्क (गै.टे.)

सा.का.नि. 737(अ).—केन्द्रीय उत्पाद शुल्क नियामवली, 2002 के नियम 9 के तहत प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय उत्पाद शुल्क एवं सीमा शुल्क बोर्ड, एतद्वारा, भारत सरकार, वित्त मंत्रालय (राजस्व विभाग) की अधिसूचना सं. 35/2001-केन्द्रीय उत्पाद शुल्क (गै.टे.) जिसे सा.का.नि. 464 (अ), दिनांक 26 जून, 2001 के तहत भारत के राजपत्र, असाधारण के भाग II, खण्ड-3, उपखण्ड (i) में प्रकाशित किया गया था, में निम्नलिखित और आगे भी संशोधन करता है, यथा –

उक्त अधिसूचना में,-

- (i) उपवाक्य (1) के पश्चात, निम्नलिखित परंतुक को अंतःस्थापित किया जाएगा, यथा –

“बशर्ते कि ऐसा कोई व्यक्ति जो कि केन्द्रीय उत्पाद शुल्क टैरिफ अधिनियम, 1985 (1986 का 5) की प्रथम अनुसूची के अध्याय शीर्ष 7113 के अंतर्गत आने वाले आभूषणों की वस्तुओं या आभूषणों की वस्तुओं के भाग या दोनों का किसी कारीगर के द्वारा या अन्य किसी प्रकार से विनिर्माण कराता है, 31 जुलाई, 2016 तक अपना पंजीकरण करा सकता है।”

- (ii) उपवाक्य (7) के पश्चात निम्नलिखित परंतुक को अंतःस्थापित किया जाएगा, यथा :-

“बशर्ते कि केन्द्रीय उत्पाद शुल्क अधिनियम, 1985 (1986 का 5) की प्रथम अनुसूची के अध्याय शीर्ष 7113 के अंतर्गत आने वाले आभूषणों की वस्तुओं या आभूषणों की वस्तुओं के भाग या दोनों के विनिर्माता या प्रधान विनिर्माता, जैसी भी स्थिति हो, के मामले में, जैसा कि उपवाक्य (i) के अंतर्गत दिया गया है, अपने कारखाने के परिसर का प्लान जमा करने की जरूरत नहीं होगी।”

[फा.सं. 354/25/2016-टीआरयू (पार्ट-I)]

अनुराग सहगल, अवर सचिव

नोट : प्रधान अधिसूचना सं. 35/2001-केन्द्रीय उत्पाद शुल्क (गै.टे.), दिनांक 26 जून, 2001, को सा.का.नि. 464 (अ), दिनांक 16 सितम्बर, 1993 के तहत भारत के राजपत्र, असाधारण में प्रकाशित किया गया था और इसमें अंतिम बार अधिसूचना सं. 32/2016-केन्द्रीय उत्पाद शुल्क (गै.टे.), दिनांक 11 जुलाई, 2016, जिसे सा.का.नि. 679 (अ), दिनांक 11 जुलाई, 2016 के तहत प्रकाशित किया गया था, के द्वारा संशोधन किया गया है।

NOTIFICATION

New Delhi, the 26th July, 2016

No. 38/2016 – Central Excise (N.T.)

G.S.R. 737 (E).—In exercise of the powers conferred by rule 9 of the Central Excise Rules, 2002, the Central Board of Excise and Customs hereby makes the following further amendments in the notification of the Government of India in the Ministry of Finance (Department of Revenue) No. 35/2001-Central Excise (N.T.), published in the Gazette of India, Extraordinary, Part II, Section 3, Sub-section (i) *vide* G.S.R. 464 (E), dated the 26th June, 2001, namely :-

In the said notification,-

- (i) after clause (1), the following proviso shall be inserted, namely,-

“Provided that a person engaged in manufacture of articles of jewellery or parts of articles of jewellery or both, falling under chapter heading 7113 of the First Schedule to the Central Excise Tariff Act, 1985 (5 of 1986), either through a job-worker or otherwise, may get himself registered by 31st day of July, 2016.”.

- (ii) after clause (7), the following proviso shall be inserted, namely,-

“Provided that in case of a manufacturer or principal manufacturer, as the case may be, of articles of jewellery or parts of articles of jewellery or both, falling under chapter heading 7113 of the First Schedule to the Central Excise Tariff Act, 1985 (5 of 1986), there shall be no requirement to submit plan of the factory premises, as provided under sub-clause (i).”.

[F. No. 354/25/2016 –TRU (Pt.-I)]

ANURAG SEHGAL, Under Secy.

Note: - The principal notification No. 35/2001-Central Excise (N.T.), dated the 26th June, 2001, published in the Gazette of India, Extraordinary, *vide* G.S.R. 464 (E), dated the 16th September, 1993 and last amended by notification No. 32/2016 – C.E. (N.T.), dated the 11th July, 2016, published *vide* G.S.R. 679(E), dated the 11th July, 2016.

अधिसूचना

नई दिल्ली, 26 जुलाई, 2016

सं. 39/2016 - केन्द्रीय उत्पाद शुल्क (गै.टे.)

सा.का.नि. 738(अ).—केन्द्रीय उत्पाद शुल्क अधिनियम, 1944 (1944 का 1) की धारा 37, केन्द्रीय उत्पाद शुल्क नियमावली, 2002 के नियम 12 के उप-नियम (2) के उपवाक्य (ख) के साथ पठित, के तहत प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए केन्द्र सरकार, एतद्वारा, भारत सरकार, वित्त मंत्रालय (राजस्व विभाग) की अधिसूचना सं. 17/2006-केन्द्रीय उत्पाद शुल्क (गै.टे.), सा.का.नि. 455, दिनांक 1 अगस्त, 2006, में और आगे निम्नलिखित संशोधन करती है, यथा :-

उक्त अधिसूचना में, उपवाक्य (ii) के पश्चात, निम्नलिखित उपवाक्य को अंतःस्थापित किया जाएगा, यथा :-

“(iii) केन्द्रीय उत्पाद शुल्क टैरिफ अधिनियम, 1985 (1986 का 5) की प्रथम अनुसूची के शीर्ष 7113 के अंतर्गत आने वाले आभूषणों या आभूषणों की वस्तुओं के भाग या दोनों का विनिर्माता या प्रधान विनिर्माता, जैसी भी स्थिति हो।”।

[फा.सं. 354/25/2016-टीआरयू (पार्ट-I)]

अनुराग सहगल, अवर सचिव

नोट : प्रधान अधिसूचना को अधिसूचना सं. 17/2006-केन्द्रीय उत्पाद शुल्क (गै.टे.), दिनांक 01 अगस्त, 2006, सा.का.नि. 455, दिनांक 1 अगस्त, 2006, के द्वारा भारत के राजपत्र, असाधारण के भाग II, खण्ड-3, उपखण्ड (i) में प्रकाशित किया गया था और इसमें अंतिम बार अधिसूचना सं. 42/2008- केन्द्रीय उत्पाद शुल्क (गै.टे.), दिनांक 29 सितम्बर, 2008, जिसे सा.का.नि. 698 (अ), दिनांक

29 सितम्बर, 2008 के द्वारा भारत के राजपत्र, असाधारण के भाग II, खण्ड-3, उपखण्ड (i) में प्रकाशित किया गया था, के द्वारा संशोधन किया गया है।

NOTIFICATION

New Delhi, the 26th July, 2016

No. 39/2016 - Central Excise (N.T.)

G.S.R. 738 (E).—In exercise of the powers conferred by section 37 of the Central Excise Act, 1944 (1 of 1944) read with clause (b) of sub-rule (2) of rule 12 of the Central Excise Rules, 2002, the Central Government hereby makes the following amendment in the notification of the Government of India, Ministry of Finance (Department of Revenue) No. 17/2006-Central Excise dated (N.T.) 1st August, 2006, published in the Gazette of India *vide* number G.S.R. 455(E) dated the 1st August, 2006, namely:-

In the said notification, after clause (ii), the following clause shall be inserted, namely:-

“(iii) manufacturer or principal manufacturer, as the case may be, of articles of jewellery or parts of articles of jewellery or both, falling under heading 7113 of the First Schedule to the Central Excise Tariff Act, 1985 (5 of 1986).”.

[F. No. 354/25/2016 –TRU (Pt.-I)]

ANURAG SEHGAL, Under Secy.

Note.— The principal notification was published in the Gazette of India, Extraordinary, Part II, Section 3, Sub-section (i), *vide* notification No. 17/2006-Central Excise (N.T) dated 1st August, 2006 *vide* number G.S.R. 455(E) dated the 1st August, 2006 and was last amended by notification No. 42/2008-Central Excise (N.T), dated the 29th September, 2008, published in the Gazette of India, Extraordinary, Part II, Section 3, Sub-section (i), *vide* number G.S.R 698(E), dated the 29th September, 2008.

अधिसूचना

नई दिल्ली, 26 जुलाई, 2016

सं. 40/2016-केन्द्रीय उत्पाद शुल्क (गै.टे.)

सा.का.नि. 739(अ).—केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क और सीमाशुल्क बोर्ड, केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क नियम, 2002 के नियम 9 के उपनियम (2) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, यह समाधान हो जाने पर कि लोकहित में ऐसा करना आवश्यक है, वित्त मंत्रालय के राजस्व विभाग की अधिसूचना सं0 36/2001-केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क (एनटी), तारीख 26 जून, 2001 जो भारत के राजपत्र, असाधारण भाग 2, खंड (3) उपखंड (i) में, सा.का.नि. सं. 465(अ), तारीख 26 जून, 2001 द्वारा प्रकाशित की गई थी, में निम्नलिखित और संशोधन करती है,-

उक्त अधिसूचना के अनुच्छेद (3) में स्पष्टीकरण के स्थान पर निम्नलिखित रखा जाएगा, अर्थात्:-

"स्पष्टीकरण - इस अधिसूचना का उद्देश्य के लिए "निर्दिष्ट सीमा" का अर्थ होगा,-

- (क) केन्द्रीय उत्पाद शुल्क टैरिफ अधिनियम, 1985 (1986 का 5) की प्रथम अनुसूची के शीर्ष 7113 के अंतर्गत आने वाले माल के संदर्भ में, पूरी छूट सीमा;
- (ख) उपरोक्त (क) से भिन्न माल के लिए, पूरी छूट सीमा से साठ लाख रुपये घटाकर ।" ।

[फा. सं. 354/25/2016-टीआरयू (पार्ट-I)]

अनुराग सहगल, अवर सचिव

टिप्पण : मूल नियम, अधिसूचना सं. 36/2001-केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क (एन.टी.), तारीख 26 जून, 2001 द्वारा सा.का.नि. 465(अ), तारीख 26 जून, 2001 द्वारा भारत के राजपत्र, असाधारण, भाग 2, खंड 3, उपखंड (i) प्रकाशित किए गए थे और अधिसूचना सं.

19/2016-केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क (एन.टी.), तारीख 1 मार्च, 2016 सा.का.नि. 250(अ), तारीख 1 मार्च, 2016 द्वारा प्रकाशित की गई थी, अंतिम संशोधन किया गया था।

NOTIFICATION

New Delhi, the 26th July, 2016

No. 40/2016 Central Excise (N.T.)

G.S.R. 739(E).—In exercise of the powers conferred by sub-rule (2) of rule 9 of the Central Excise Rules, 2002, the Central Board of Excise and Customs, being satisfied that it is necessary in the public interest so to do, hereby makes the following further amendments in the notification number 36/2001-Central Excise (N.T.), dated the 26th June, 2001, in the Ministry of Finance, Department of Revenue, 2001, published in the Gazette of India, Extraordinary, Part II, Section 3, Sub-section (i), *vide* number GSR 465 (E), dated the 26th June, 2001, namely,-

In the said notification, in the paragraph (3), for Explanation, the following shall be substituted, namely:-

“Explanation. - For the purpose of this notification, the expression “specified limit” shall mean,-

- (a) in respect of goods falling under heading 7113 of the First Schedule to the Central Excise Tariff Act, 1985 (5 of 1986), full exemption limit;
- (b) for goods, other than (a) above, full exemption limit minus sixty lakh rupees.”.

[F. No. 354/25/2016 –TRU (Pt.-I)]

Anurag Sehgal, Under Secy.

Note: The principal notification No. 36/2001 - Central Excise (N.T.), dated the 26th June, 2001 was published in the Gazette of India, *vide* number G.S.R. 465 (E), dated the 26th June, 2001 and was last amended, *vide* notification No. 19/2016-Central Excise (N.T.), dated the 1st March, 2016 published in the Gazette of India, *vide* number G.S.R. 250(E), dated the 1st March, 2016.